दिसम्बर , 2021 वर्ष : 42 अंक : 12

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

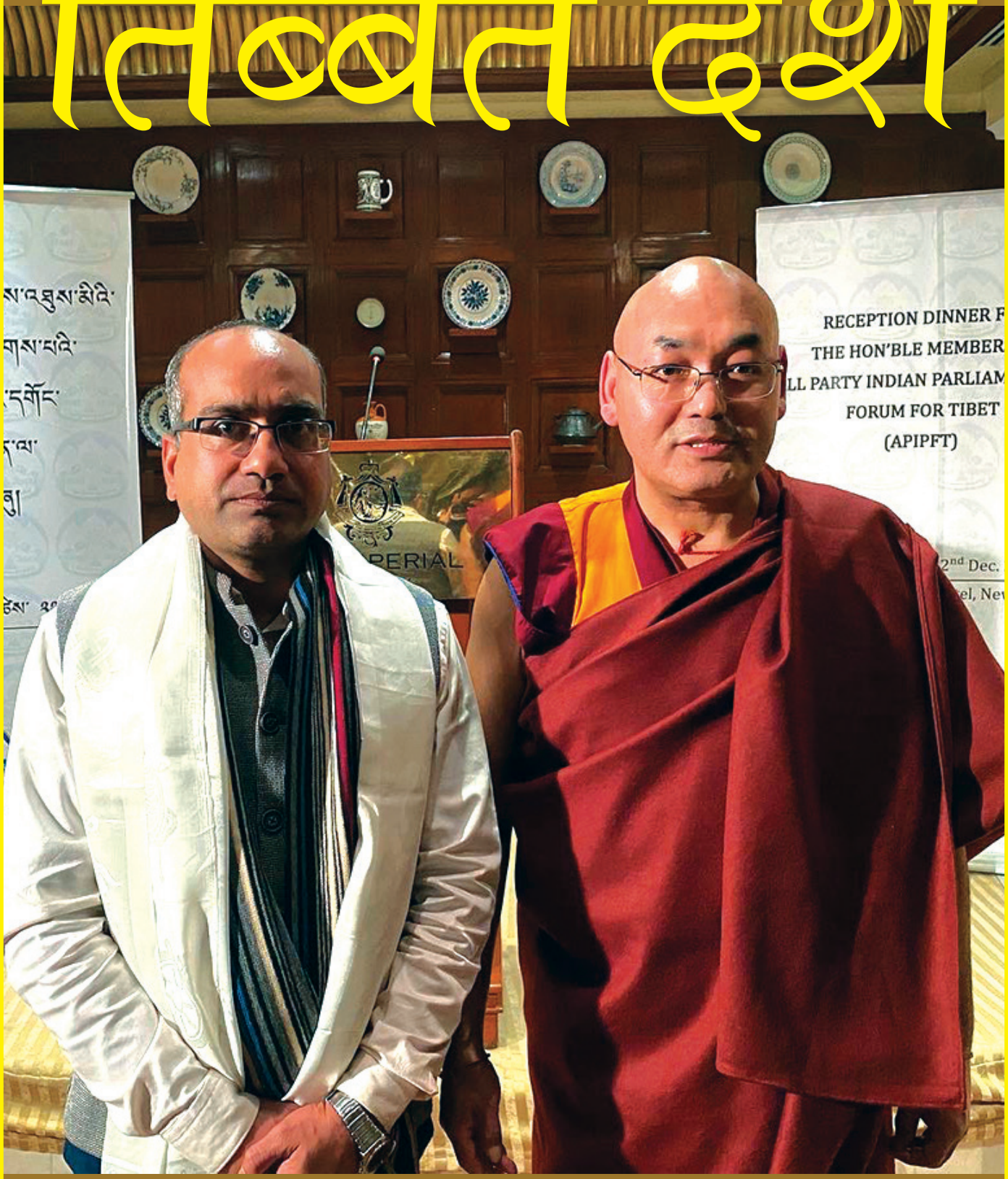

ऑल-पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत के संयोजक श्री सुजीत कुमार और निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

दिसम्बर , 2021 वर्ष : 42 अंक :12

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित

तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत परम पावन दलाई लामा जी का दर्शन करते हुए

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी , जिगमे सुलट्रिम

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
जामयंग छोपेल, छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

करुणा और बुद्धि से चुनौतियों का सामना 1

परम पावन दलाई लामा ने आर्कबिशप डेसमंड टूटू के निधन पर शोक व्यक्त किया 2

परम पावन दलाई लामा ने लॉकडाउन के बाद प्रथम व्यक्तिगत दर्शन होने का गौरव सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग को प्रदान किया 3

आरएसएस प्रमुख श्री मोहन भागवत ने परम पावन दलाई लामा का दर्शन किया 4

चीनी पुलिस की नई इकाई ने नागचु में ऑनलाइन गतिविधियों पर निगरानी बढ़ाई 5

सितंबर २०२० में गिरफ्तारी के बाद से ही बारोंग मठ से तिब्बती भिक्षु गायब हैं 6

चीनी जेल में बन्दी बनाई गए तिब्बती पर्यावरणविद् गंभीर रूप से मरणासन्न स्थिति में हैं 7

सांस्कृतिक क्रांति जैसा विध्वंस: चीन ने तिब्बत के ड्रैकगो में एक गगनचुंबी बुद्ध प्रतिमा और ४५ विशाल प्रार्थना चक्रों को ध्वस्त कर दिया 8

ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया गया, श्री सुजीत कुमार को नया संयोजक नियुक्त किया गया 9

भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने १०वीं तवांग तीर्थ यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना किया 10

समाचार -

भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३२वीं वर्षगांठ मनाई 11

गोल्डन इंडिया पब्लिक स्कूल ने वाराणसी के दुर्गाकुंड में 'ए डे फॉर तिब्बत' कार्यक्रम आयोजित किया 12

महामती प्राणनाथ पीजी कॉलेज ने यूपी के मऊ और चित्रकूट में 'ए डे फॉर तिब्बत' का आयोजन 13

जन जागरण साइकिल यात्रा फिर शुरू 14

भारत तिब्बत संवाद मंच ने 'तिब्बत पर सांस्कृतिक कार्यक्रम' का आयोजन किया 15

तिब्बती स्वतंत्रता सेनानी ने १२७ दिवसीय हिमालय यात्रा पूरी की 16

तिब्बत मुक्ति साधना असम में जन आंदोलन का रूप धारण कर चुके है। 17

असम: व्याख्यान में ब्रह्मपुत्र पर चीन के बांधों और तिब्बती संस्कृति के बारे में प्रकाश डाला गया 18

तिब्बती सांसदों ने अपने स्पीकर के नेतृत्व में हिमाचल विधानसभा का संचालन देखा 19

तिब्बती संसदीय समर्थन अभियान सातवें दिन भी जारी 20

चीन पर यूरोपीय संघ-अमेरिका वार्ता की दूसरी उच्च स्तरीय बैठक में तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर प्रमुखता से बात हुई 21

'स्विस पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत' ने शीतकालीन सत्र के लिए बैठक की 22

बीजिंग ने तिब्बती भाषा के खिलाफ अभियान चला रखा है 23

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट www.indiatibet.net Email: indiatibet7@gmail.com

भारत-चीन सीमा विवाद से सिर्फ पेंटागन ही नहीं, ताइवान और तिब्बत भी चिंतित 24

अपनी बात

तिब्बत के विशेष अमरीकी समन्वयक की नियुक्ति से परेशान होगा चीन

अमरीकी सरकार ने तिब्बत मामले के लिये इसी दिसम्बर, २०२१ में विशेष समन्वयक नियुक्त कर स्पष्ट संकेत दिया है कि चीन की विस्तारवादी नीति का अमरीकी विरोध और अधिक आक्रामक होगा। उसकी स्पष्ट मान्यता है कि चीन ने स्वतंत्र तिब्बत पर बलपूर्वक अवैध कब्जा कर रखा है। अपने अवैध कब्जे को उचित ठहराने के लिये चीन सरकार षड्यंत्रपूर्वक तिब्बत का चीनीकरण कर रही है। तिब्बती पहचान मिटाने के लिये तिब्बती भाषा, संस्कृत, कला, इतिहास एवं जीवनशैली में चीनी मान्यताओं को प्राथमिकता दी जा रही है। इससे तिब्बत में तिब्बती ही अल्पसंख्यक हो जायेंगे और उनकी जगह चीनी प्रभुत्व स्थापित हो जायेगा। तिब्बत में सुनियोजित तरीके से चीनियों की बढ़ती आबादी तथा प्रशासन समेत सभी क्षेत्रों में चीनियों का निर्णायक प्रभाव इसी का प्रमाण है। अमरीका यह भी नहीं चाहता कि चीन सरकार तिब्बतियों की सुस्थापित आध्यात्मिक परंपराओं को अपने हित में विकृत करे।

अमरीका के तिब्बत नीति अधिनियम, २००२ के परिणास्वरुप तिब्बती संघर्ष को विश्वस्तर पर जारी सहयोग एवं समर्थन लगातार बढ़ता जा रहा था। इसके बाद अमरीका ने अपने २०२० के तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम द्वारा विश्वजनमत को तिब्बती संघर्ष के पक्ष में ज्यादा मोड़ा है। इसी २०२० के तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम के अनुरुप अमरीका ने उज्राजेया को तिब्बत मामले में विशेष समन्वयक बनाया है। अमरीकी प्रशासनिक ढाँचे में यह पद अत्यन्त महत्वपूर्ण अवर सचिव स्तर का है। अमरीकी कदम से तिब्बतियों एवं तिब्बत समर्थकों को पूरा विश्वास है कि उज्राजेया के प्रयासों से तिब्बत में जारी चीन की दमनकारी नीति पर रोक लगेगी। चीन तिब्बती मठों, आध्यात्मिक स्थलों, संस्थाओ तथा अन्य सभी आध्यात्मिक गतिविधियों से अनुचित नियंत्रण हटाने के लिये बाध्य होगा। तिब्बत को चीन बनाने की उसकी कोशिश प्रभावशून्य हो जायेगी।

नवनियुक्त विशेष समन्वयक को अपने प्रयासों से तिब्बती प्रतिनिधियों के साथ चीन सरकार की वार्ता पुनः प्रारंभ करानी होगी। परमपावन दलाईलामा, तिब्बती जनता द्वारा लोकतांत्रिक तरीके से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार तथा अन्य तिब्बत समर्थकों के मतानुसार अहिंसक एवं शांतिपूर्ण तिब्बती संघर्ष को समाप्त करने के लिये चीन सरकार यथाशीघ्र दलाई लामा के और तिब्बत सरकार के प्रतिनिधियों के साथ वर्षों से बंद वार्ता प्रारंभ करे। इससे वाद-विवाद (डिबेट) की जगह संवाद (डायलाग) का वातावरण मजबूत होगा। संवाद से चीन की संप्रभुता एवं तिब्बत की स्वायत्तता का समाधान एक साथ हो जायेगा। पूर्ण आजादी की मांग छोड़कर दलाई लामा और निर्वासित तिब्बत सरकार चीन के संविधान एवं उसके राष्ट्रीयता संबंधी कानून के अन्तर्गत तिब्बत के लिए केवल "वास्तविक स्वायत्तता " की मांग कर रहे हैं। इस मध्यममार्ग को मान लेने से तिब्बत और चीन को समान रुप से लाभ होगा। इस समय चीन सरकार तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाई लामा के पुनर्जन्म एवं उनके उत्तराधिकारी के चयन की सुस्थापित आध्यात्मिक परंपरा को चुनौती दे रही है। अमरीका समेत विश्वजनमत इसके विरुद्ध है। इसके अनुसार दलाई लामा के पुनर्जन्म के मामले में चीनी हस्तक्षेप पूर्णतः अस्वीकार है। इसका निर्णय परंपरानुसार बौद्ध धर्मगुरु, विद्वान तथा स्वयम् दलाई लामा करेंगे। चीन तिब्बतियों के आध्यात्मिक अधिकारों तथा उनके अन्य सभी मौलिक अधिकारों का सम्मान करे। उनका संरक्षण करे। तिब्बत के अंदर मानवाधिकार हनन के कारण गत कुछ वर्षों में ही कई तिब्बती अपने ही शरीर में आग लगाकर बलिदान कर चुके हैं। चीन अन्य देशों में रह रहे तिब्बतियों को भी प्रताड़ित करने हेतु विभिन्न देशों पर दबाव बनाये रहता है। उनकी सरकारों तथा जनप्रतिधियों को चेतावनी देने में तत्पर रहता है। फिर भी तिब्बती मामले में चीनी हठधर्मिता पूर्णतः निष्प्रभावी है।

वर्ष १९८९ में १० दिसम्बर को दलाई लामा को शांति के लिये नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विश्व के विभिन्न देशों में इस अवसर पर आयोजित अनेक कार्यक्रमों में चीन की अमानवीय तथा अलोकतांत्रिक उपनिवेशवादी नीति की तीव्र भर्त्सना करते हुए चीन पर अतंरराष्ट्रीय दबाव बढ़ाने का संकल्प लिया गया। भारतीय आयोजनों में कहा गया कि भारतीय जनता लगातार तिब्बती संघर्ष में साथ है। इसमें भारत सरकार एवं प्रांतीय सरकारों का सहयोग और समर्थन अतुलनीय है। अब भारत सरकार इसे राजनीतिक समर्थन खुलकर प्रदान करे। चीन के साथ भारत के संबंध मजबूत करने के लिये तिब्बत समस्या का हल जरुरी है। "हिन्दी-चीनी भाई भाई" तथा पंचशील" जैसे चीनी हथकंडे भारत को नुकसान ही पहुँचायेंगे।

चीन सरकार ने हम भारतीयों की पवित्र कैलाश-मानसरोवर यात्रा को आर्थिक कमाई तथा द्वेषपूर्ण गुप्तचरी का माध्यम बना रखा है। स्वतंत्र तिब्बत में भारतीय स्वतंत्रतापूर्वक कैलाश मानसरोवर जाते थे और तिब्बती भारत में बौद्ध स्थलों की यात्रा करते थे। ये यात्रायें पूर्णतः निःशुल्क थीं। भारतीय शांति, सुरक्षा, समृद्धि एवं स्वाभिमान के लिये बहुत बड़ा खतरा है चीन। डोंकलाम और गलवान घाटी जैसी घटनाओं के प्रति अनेक भारतीय महापुरुषों ने १९४९ से ही सावधान किया था। उनकी आशंका तिब्बत पर चीनी नियंत्रण, भारत पर १९६२ में चीनी आक्रमण तथा बड़े भारतीय भूभाग पर चीनी कब्जे के रुप में सत्र साबित हुई। हमें १४ नवंबर, १९६२ को स्वीकृत सर्वसम्मत संसदीय प्रस्ताव के अनुरुप भारतीय भूभाग को चीनी कब्जे से मुक्त कराना है। भारत भी अमरीका के समान स्पष्ट और कठोर नीति अपनाकर अपने अन्तरराष्ट्रीय उत्तारदायित्व का परिचय दे।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• करुणा और बुद्धि से चुनौतियों का सामना

dalailama.com, २३ दिसंबर, २०२१

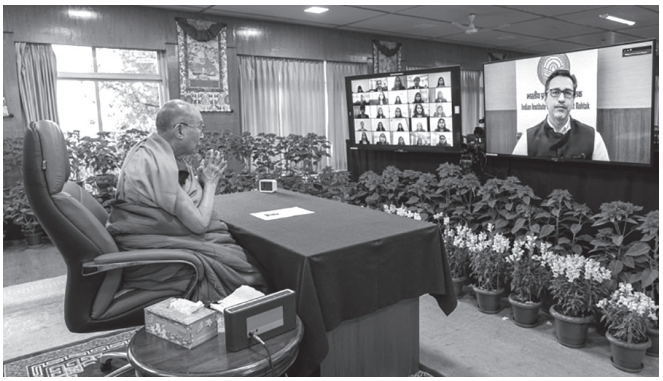

आभासी बेठक मे जुड़े परम पावन दलाई लामा और भारतीय प्रबंधन संस्थान, रोहतक के निदेशक प्रोफेसर धीरज शर्मा

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। आज २३ दिसंबर की सुबह भारतीय प्रबंधन संस्थान, रोहतक के निदेशक प्रोफेसर धीरज शर्मा ने परम पावन दलाई लामा का 'करुणा और बुद्धि से चुनौतियों का सामना' विषय पर संस्थान द्वारा आयोजित एक वार्तालाप का गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि परम पावन के पास आज की दुनिया में कलह और संघर्ष में फंसे लोगों के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ हो सकता है। हालांकि, बाकी लोग आराम से रहते हैं। यह एक ऐसी दुनिया है जिसमें कुछ लोग दूसरों को करुणा की दृष्टि से देखने में विफल रहते हैं, क्योंकि वे अपने स्वयं के अधिकार के प्रति जागरूक रहते हैं।

परम पावन ने उत्तर दिया, 'मैं भारतीय मित्रों से बात करने का अवसर पाकर अत्यंत प्रसन्न हूं। चीन और भारत दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाले देश हैं, लेकिन यह भारत है जिसने अहिंसा और करुणा की अपनी कई हज़ार साल पुरानी परंपराओं को बिना किसी नुकसान के संरक्षित किया है। इतना ही नहीं, इस देश में दुनिया की तमाम धार्मिक परंपराएं एक साथ रहती हैं। यहां धार्मिक सहिष्णुता की काफी पुरानी परंपरा है। हालांकि, हमेशा कुछ लोग ऐसे होते हैं जो परेशानी पैदा करते हैं, लेकिन कोई नुकसान न करने के महत्व का मतलब है कि धार्मिक सद्भाव कायम है।

'विद्वान इन परंपराओं को अपनाने वाले बेहतर दार्शनिक दृष्टिकोण पर बहस कर सकते हैं। लेकिन, सामान्य लोगों के दृष्टिकोण और व्यवहार के संदर्भ में भारत इस बात का उदाहरण पेश करता है कि धार्मिक परंपराएं शांति से साथ-साथ रह सकती हैं।'

तथापि जहां तक आधुनिक शिक्षा का संबंध है, इसमें भौतिकवादी जीवन शैली पर शायद बहुत अधिक बल दिया गया है। इसका मतलब है कि करुणा को शामिल करने और पाठ्यक्रम में कोई नुकसान न करने पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

पिछली शताब्दी में, महात्मा गांधी ने दिखा दिया कि कैसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अहिंसा का उपयोग प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इसके बाद, दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका में ऐसे ही नेताओं ने उनका उदाहरण प्रस्तुत किया। आज की दुनिया में जहां नैतिक सिद्धांतों में काफी कमी है, लेकिन भारत में करुणा के महत्व को प्रकट करने की क्षमता है।

हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि युवा पीढ़ी इसका अनुकरण करे। चूंकि हम सभी इंसान हैं, इसलिए हमें एक-दूसरे से गर्मजोशी के साथ पेश आने की जरूरत है। हम में से प्रत्येक की एक मां भी रही है और उसने हमें जो देखभाल और स्नेह दिया और जिसके कारण हम आज जीवित हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारा जीवन इस तरह से शुरु होता है कि करुणा हमारे स्वभाव का हिस्सा होता है।

सदियों की लड़ाई और हथियारों के निर्माण में संसाधनों को नष्ट करने के बाद हमें करुणा, अहिंसा और व्यापक दुनिया में कोई नुकसान नहीं करने के विचारों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। इसका एक तरीका आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान को 'अहिंसा' और 'करुणा' के साथ जोड़ना है। इन दिनों मैं जिन वैज्ञानिकों से मिलता हूं, वे व्यक्ति और समाज दोनों पर पड़ने वाले प्रभावों के लिए मन की शांति खोजने के महत्व की सराहना करते हैं। मेरा मानना है कि भारत धर्मनिरपेक्ष रुप से प्राचीन और आधुनिक स्रोतों से ज्ञान के संयोजन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।'

संकाय सदस्यों, छात्रों और आईआईएम रोहतक समुदाय के सदस्यों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए परम पावन ने भारत की इस बात के लिए फिर से प्रशंसा की कि दुनिया के सभी धार्मिक संप्रदाय यहां फलते-फूलते हैं। प्रत्येक धर्म करुणा को बढ़ावा देने के तरीके सिखाता है।

उन्होंने सुझाव दिया कि अधिकार की भावना के साथ चरम इच्छाओं को प्राप्त करने की कोशिश करना अदूरदर्शी है। क्योंकि हमारे सामने उपस्थित चुनौतियां साफ-साफ कह रही हैं कि हमें पूरी दुनिया और पूरी मानवता को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। बहुत अधिक भौतिकवादी होना भी इसी तरह अदूरदर्शी है। जीवन का उद्देश्य एक दूसरे को नुकसान पहुंचाना और मारना नहीं है, बल्कि मानवता की एकता को ध्यान में रखते हुए सहयोगी समुदाय को बढ़ावा देना है। करुणा के सिद्धांतों पर आधारित और कोई नुकसान न करने वाले समुदाय अधिक शांतिपूर्ण दुनिया बनाने में योगदान करते हैं।

परम पावन ने घोषणा की कि हमें इसी ग्रह पर साथ-साथ रहना है। इसलिए, दूसरों को दुश्मन के रुप में देखना अच्छी बात नहीं है। चूंकि तिब्बतियों और चीनियों को अंततः एक साथ रहना है, इसलिए एक-दूसरे से लड़ना और मारना किसी काम का नहीं है। हम जहां भी रहें, हमारा लक्ष्य बेहतर शांतिपूर्ण विश्व बनाना होना चाहिए।

जलवायु संकट और इसके गंभीर परिणाम हमें बता रहे हैं कि हमें साथ मिलकर काम करना सीखना चाहिए, क्योंकि हमें भी साथ रहना है। हमें पृथ्वी की रक्षा करने और मनुष्यों और अन्य प्राणियों के जीवन को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

परम पावन ने कहा कि संघर्ष को दूर करना संभव है। उन्होंने पिछली शताब्दी के दो विश्व युद्धों के बाद हुई दो सकारात्मक घटनाओं की ओर इशारा किया। एक संयुक्त राष्ट्र का उदय और दूसरा यूरोपीय संघ (ईयू) की स्थापना। सदियों के संघर्ष और युद्ध के बाद जर्मनी और फ्रांस के नेताओं ने फैसला किया कि अब बहुत हो गया है और यूरोप के बड़े सामान्य हितों को अब सभी यूरोपीय देशों के सामने रखने का समय है। परम पावन ने सुझाव दिया कि बेहतर होगा जब अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया के राष्ट्र इस उदाहरण का अनुसरण करेंगे।

कुल मिलाकर, परम पावन ने व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने और हमारे सामने आने वाले मुद्दों पर दीर्घकालिक रुचि लेने का सुझाव दिया। अनेक ऐसी समस्याएं होती हैं, जो केवल संकीर्ण दृष्टि से देखने से ही और भी विकराल हो जाती हैं। उन्होंने सलाह दी कि मीडिया को बुनियादी मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि योग्यतम के जीवित रहने (सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट) की धारणा पुरानी है। प्रतिस्पर्धा केवल सीमित मूल्य की होती है जब हम सभी को एक साथ रहना होता है। अब केवल अपने अल्पकालिक हित के बारे में सोचना ही काफी नहीं है।

यह पूछे जाने पर कि वे खुद को 'भारत का पुत्र' होने का दावा क्यों करते हैं, उन्होंने सहमति व्यक्त करते हुए कहा की कि उनका जन्म तिब्बत में हुआ था। लेकिन उन्होंने स्पष्ट किया कि तिब्बती संस्कृति बुद्ध की शिक्षाओं में निहित है, खासकर वे शिक्षाएं जो नालंदा विश्वविद्यालय में पल्लवित-पुष्पित हुई थीं। उन्होंने घोषणा की कि जब से उन्होंने भारतीय पुस्तकों, भारतीय आचार्यों के कार्यों का अध्ययन किया है, बचपन से ही उनका मन भारतीय विचारों से भरा हुआ है। राजनीतिक कठिनाइयों के परिणामस्वरूप वह भारत सरकार के अतिथि बन गए। यह एक ऐसा देश है, जहां वह स्वतंत्रता का अनुभव करते है।

जैसा कि उन्होंने पहले उल्लेख किया था, चीन और भारत पृथ्वी पर दो सबसे अधिक आबादी वाले देश हैं। लेकिन यह भारत ही है जहां लोकतंत्र पनपता है और धार्मिक स्वतंत्रता फलती-फूलती है। जैसे-जैसे अधिक से अधिक वैज्ञानिक मन और भावनाओं के कामकाज में रुचि लेते हैं, प्राचीन भारतीय ज्ञान के प्रति जिज्ञासा बढ़ रही है। भारत के ये सभी गुण गौरव के स्रोत हैं।

प्रो.धीरज शर्मा ने सुबह की बातचीत में भाग लेने के लिए परम पावन को धन्यवाद दिया और उन्हें आश्वस्त किया कि दर्शकों ने उनके कहने से बहुत कुछ सीखा है। अपनी ओर से परम पावन ने उत्तर दिया कि वे भारतीय मित्रों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करने का अवसर पाकर बहुत खुश हैं और बदले में उन्होंने भी धन्यवाद दिया।

• परम पावन दलाई लामा ने आर्कबिशप डेसमंड टूटू के निधन पर शोक व्यक्त किया

dalailama.com, २६ दिसंबर, २०२१

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। अपने आदरणीय बड़े आध्यात्मिक भाई और अच्छे मित्र आर्कबिशप डेसमंड टूटू के निधन का दुखद समाचार मिलने पर परम पावन दलाई लामा ने आर्कबिशप की बेटी, रेव एमफो टूटू को शोक प्रकट करते हुए पत्र लिखा।

उन्होंने लिखा, 'कृपया मेरी हार्दिक संवेदना स्वीकार करें और इसे अपनी मां और अपने परिवार के अन्य सदस्यों तक पहुंचाएं। मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूं। जैसा कि आप जानते हैं, वर्षों से आपके पिता और मेरे बीच स्थायी मित्रता रही है। मुझे याद है कि हमने 2015 में धर्मशाला में एक सप्ताह साथ रहने के अलावा भी कई मौकों पर एक साथ समय बिताया है। इस दौरान हमने दुनिया में शांति और आनंद को बढ़ाने के बारे में अपने विचारों को फैलाने का काम किया। हमारे बीच दोस्ती और आध्यात्मिक बंधन कुछ ऐसा था जिसे हमने संजोया।'

उन्होंने लिखा, 'आर्कबिशप डेसमंड टूटू अधिक से अधिक लोक कल्याण के लिए अपने भाइयों और बहनों की सेवा करने के लिए पूरी तरह से समर्पित थे। वह एक सच्चे मानवतावादी और मानवाधिकारों के प्रतिबद्ध पैरोकार थे। सत्य और सुलह सफाई के लिए उनका काम दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा था।' उनके निधन से, हमने एक महान व्यक्ति को खो दिया है, जिन्होंने वास्तव में एक सार्थक जीवन जिया। वह दूसरों की सेवा के लिए समर्पित थे, खासकर उन लोगों की जो बहुत ही दीन-हीन और अभाग्यशाली हैं। मुझे विश्वास है कि हम भी दूसरों की मदद करनेवाले उनके महान कार्यों का अनुकरण करके उन्हें सबसे अच्छी श्रद्धांजलि दे सकते हैं और उन्हें अमर बनाकर रख सकते हैं।'

• परम पावन दलाई लामा ने लॉकडाउन के बाद प्रथम व्यक्तिगत दर्शन होने का गौरव सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग को प्रदान किया

tibet.net, १५ दिसंबर, २०२१

धर्मशाला। तिब्बती आध्यात्मिक धर्मगुरु परम पावन दलाई लामा ने आज १५ दिसंबर को अपने आधिकारिक निवास पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग को व्यक्तिगत रूप से दर्शन दिए। सिक्योंग २०२० की शुरुआत में कोविड-१९ महामारी शुरू होने के बाद से यह परम पावन दलाई लामा के पहले व्यक्तिगत दर्शन प्रप्त करने वाले बने। सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग इस साल मई में सिक्योंग की जिम्मेदारी ग्रहण करने के बाद से भी परम पावन दलाई लामा के पहले आधिकारिक व्यक्तिगत दर्शक भी हैं।

उपस्थित मीडियाकर्मियों से बात करते हुए सिक्योंग ने परम पावन दलाई लामा के प्रति आभार व्यक्त किया कि उन्होंने उन्हें महामारी के बाद पहली बार व्यक्तिगत दर्शक बनने का गौरव प्रदान किया। साथ ही उन्होंने परम पावन दलाई लामा के मार्गदर्शन और हार्दिक आशीर्वाद से चीन-तिब्बती संघर्ष के समाधान की दिशा में काम करने और अपने साथ तिब्बती जनता की सेवा करने का वचन दिया।

सिक्योंग ने संवाददाताओं से कहा, 'पिछले डेढ़ वर्षों में परम पावन दलाई लामा ने कोविड-१९ महामारी के कारण किसी भी व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से दर्शन नहीं दिया है। आज से परम पावन जनता को व्यक्तिगत रूप से दर्शन देना शुरू किया है और सबसे पहले दर्शक का गौरव मुझे सिक्योंग के रूप में प्रदान किया है। मैं इसके लिए अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूं। धीरे-धीरे परम पावन दलाई लामा जनता के एक या दो सदस्यों को दर्शन देना शुरू करेंगे, हालांकि यह अब भी अधिकांश लोगों के लिए संभव नहीं होगा।'

उन्होंने कहा, 'जहां तक मेरी बात है, परम पावन दलाई लामा का व्यक्तिगत तौर पर मैंने अक्तूबर-२०१७ में दर्शन किया था। पिछले साढ़े चार वर्षों में मुझे परम पावन के व्यक्तिगत दर्शन का कोई मौका नहीं मिला। हालांकि हाल ही में मुझे चार बार ऑनलाइन दर्शन करने का मौका मिला है। इसलिए, मैं आज परम पावन दलाई लामा का पहली बार व्यक्तिगत दर्शन करने का मौका पाकर खुद को भाग्यशाली महसूस कर रहा हूं। मैं परम पावन दलाई लामा के आशीर्वाद और उनकी सलाह के अनुसार तिब्बती जनता और हमारे महान मुद्दों के लिए सेवा करने में अपने कर्तव्यों का पालन करने का भी वचन देता हूं।'

• आरएसएस प्रमुख श्री मोहन भागवत ने परम पावन दलाई लामा का दर्शन किया

tibet.net, २० दिसंबर, २०२१

आरएसएस के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत परम पावन दलाई लामा जी का दर्शन करते हुए

धर्मशाला। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने आज २० दिसंबर की सुबह गदेन फोडंग में परम पावन दलाई लामा का दर्शन किया। आरएसएस प्रमुख ने कल कांगड़ा में सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग और

स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल सहित ६० बुद्धिजीवियों के साथ एक सेमिनार में भाग लिया था।

आरएसएस प्रमुख भागवत कांगड़ा के पांच दिवसीय दौरे पर हैं और दर्शन के समय उनके साथ आरएसएस के वरिष्ठ नेता श्री इंद्रेश कुमार भी मौजूद रहे। परम पावन दलाई लामा के दर्शन के बाद दौरे पर आए आरएसएस के नेताओं ने १६वें कशाग के सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग, कलोंस और अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल से मुलाकात की। आरएसएस नेताओं के साथ बैठक के दौरान तिब्बती नेताओं ने परम पावन दलाई लामा और तिब्बती लोगों के आतिथ्य और समर्थन के लिए भारत सरकार और भारत के लोगों के प्रति तिब्बती लोगों की कृतज्ञता ज्ञापित की।

बैठक के बाद पत्रकारों से बात करते हुए सिक्योंग ने कहा, 'यह बहुत स्वाभाविक है कि जब श्री मोहन भागवत धर्मशाला में हों, तो उन्हें परम पावन दलाई लामा से मिलना चाहिए। और परम पावन दलाई लामा की ओर से भी यह स्वाभाविक है कि वह एक प्रमुख नेता से मिलें जो बड़ी संख्या में भारतीय आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं।'

सिक्योंग ने कहा, 'आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत की यात्रा वास्तव में तब हुई जब परम पावन दलाई लामा ने महामारी के बाद १५ दिसंबर से व्यक्तिगत तौर पर दर्शन देना शुरू किया है। इनमें से पहला दर्शन सिक्योंग को दिया, इससे यह परम पावन की दूसरी आमने-सामने की बैठक बन गई।'

हालांकि परम पावन दलाई लामा और आरएसएस के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत का खुलासा नहीं किया गया है। हालांकि, सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग ने माना कि यह बात सामान्य मुद्दों के बारे में हो सकती है। 'उन्होंने मानवता के बड़े हित के बारे में प्रमुख मुद्दों पर बात की होगी।'

बातचीत के बारे में मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए श्री इंद्रेश कुमार ने कहा कि परम पावन दलाई लामा ने उनसे कहा कि भारत धार्मिक सद्भाव का मॉडल है और भारत को इसे दुनिया को बताना चाहिए। उन्होंने कहा कि आरएसएस प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने भी तिब्बती मुद्दों के प्रति भारत का गंभीर समर्थन व्यक्त किया।

• चीनी पुलिस की नई इकाई ने नागचु में ऑनलाइन गतिविधियों पर निगरानी बढ़ाई

tibet.net, ०८ दिसंबर, २०२१

तिब्बतियों को ऑनलाइन गतिविधियों द्वारा निगरानी करते चीनी सरकार

नागचु (चीनी: नाकू) में तिब्बतियों को अपनी ऑनलाइन गतिविधियों की बढ़ती निगरानी का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि प्रीफेक्चर में एक नई निगरानी इकाई स्थापित की गई है। नागचु पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो ने हाल ही में तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) के नागचु प्रांत के तिब्बती निवासियों की ऑनलाइन गतिविधियों की बारीकी से निगरानी करने के लिए एक डिजिटल निगरानी इकाई की स्थापना की है।

तब से इस इकाई ने निशाने पर लिए गए तिब्बतियों, विशेष रूप से पार्टी कैडर, साहित्यकारों, शिक्षाविदों और महत्वपूर्ण व्यक्तियों की ऑनलाइन गतिविधियों की नियमित रूप से निगरानी की है। जिन पर 'अवैध' ऑनलाइन गतिविधियों की आशंका है, उनकी नियमित रूप से जांच की जाती है क्योंकि यूनिट उनके दैनिक फोन कॉल्स और अन्य संचार माध्यमों की जांच करती है, जिसमें सोशल नेटवर्क साइटों और चैट समूहों पर साझा की गई सामग्री शामिल हैं।

निगरानी इकाई आसानी से तिब्बतियों की ऑनलाइन गतिविधियों की जासूसी, ट्रैक और निगरानी के लिए उच्च तकनीक वाले हार्डवेयर का उपयोग करती है। हमारे स्रोत ने बताया, 'अधिकारियों ने निशाने पर लिए गए तिब्बतियों के फोन नंबरों को हार्डवेयर डिवाइस में जोड़ना शुरू कर दिया है ताकि उनके सेल फोन की स्वचालित ट्रैकिंग सक्षम हो सके।' यह मुमकिन है कि नागचु में लागू 'इलेक्ट्रॉनिक पुलिस राज्य' के इस मॉडल को जल्द ही तथाकथित तिब्बत स्वायत्त प्रांत के पूरे क्षेत्र में विस्तारित कर दिए जाने की उम्मीद है।

सूत्र ने आगे कहा, 'चीनी अधिकारियों का मानना है कि टीएआर और तिब्बत की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए ड्रिरु और नागचु क्षेत्र में स्थिरता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। नागचु प्रान्त में ड्रिरु और नागचु काउंटी वर्षों से चीनी सरकार के निशाने पर रहे हैं क्योंकि दमनकारी कानूनों और विनियमों का विरोध करने वाली राजनीतिक विरोध और गतिविधियां यहां अक्सर होती रही हैं। इसलिए इस क्षेत्र में कठोर प्रतिबंध और सख्त नीतियां लागू हैं।

टीएआर के पूर्व कम्युनिस्ट पार्टी सचिव वू यिंगजी और तिब्बत के वर्तमान कम्युनिस्ट पार्टी सचिव वांग जुन्झेंग के साथ हाल के वर्षों में आधिकारिक यात्रा के बाद प्रतिबंधों को और तेज कर दिया गया था। ड्रिरु और नागचु में भी कार्रवाई जारी है।

• सितंबर २०२० में गिरफ्तारी के बाद से ही बारोंग मठ से तिब्बती भिक्षु गायब हैं

tibet.net, २० दिसंबर, २०२१

भिक्षु तेनज़िन दरग्ये

धर्मशाला। चीनी अधिकारियों ने एक साल से पहले ही सेरशुल (चीनी: सिकू) काउंटी से तेनज़िन दरग्ये को मनमाने ढंग से हिरासत में लिया था। लेकिन अब तक उनकी नजरबंदी और शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में आधिकारिक तौर पर कुछ भी नहीं बताया गया है।

सितंबर २०२० में तिब्बत के पारंपरिक खाम प्रांत के कर्ज़े स्थित बारोंग मठ से भिक्षु तेनज़िन दरग्ये (उम्र की पुष्टि नहीं हुई) को चीनी पुलिस द्वारा एक अन्य अज्ञात भिक्षु के साथ उस समय हिरासत में लिया गया था, जब उन्होंने तथाकथित 'तिब्बत की शांतिपूर्ण मुक्ति' की ७०वीं वर्षगांठ का उत्सव मनाने से मना कर दिया था। हमारे स्रोत के अनुसार, उन्हें वर्तमान में सेरशुल काउंटी डिटेंशन सेंटर में तनहाई हिरासत में रखा जा रहा है। कर्जे को अब सिचुआन प्रांत में शामिल कर लिया गया है।

हमारे स्रोत के अनुसार, दरग्ये ने तिब्बत की तथाकथित शांतिपूर्ण मुक्ति की '७०साल

की सालगिरह नहीं होनी चाहिए' कहकर बार-बार इस वर्षगांठ का पुरजोर विरोध किया था। हमारे सूत्र ने कहा कि यह व्यापक रूप से माना जाता है कि उन्हें चीनी सरकार द्वारा राजनीतिक रूप से संवेदनशील समझे जाने वाली जानकारी और लेखन को सोशल मीडिया पर साझा करने के लिए गिरफ्तार किया गया हो सकता है। अज्ञात भिक्षु भी सेरशुल काउंटी में वोनपो टाउनशिप स्थित बारोंग मठ के हैं।

अन्य समाचार रिपोर्टों के अनुसार, दरग्ये को उनके मोबाइल फोन में परम पावन १४वें दलाई लामा के चित्र समेत समेत कई अन्य राजनीतिक रूप से संवेदनशील सामग्री पाए जाने के बाद पुलिस हिरासत में ले लिया गया। उसके साथ कई अन्य भिक्षुओं को भी गिरफ्तार किया गया हो सकता है। आरएफए ने एक सूत्र के हवाले से बताया, 'उनकी गिरफ्तारी को अब एक साल से अधिक समय हो गया है, लेकिन उनके परिवार को अभी भी इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि उन्हें कहां रखा गया है या उन पर अब तक मुकदमा चलाया जा चुका है या नहीं।'

उनके आस-पास की स्थिति अब और खराब हो गई है, क्योंकि न तो दरग्ये के स्वास्थ्य के बारे में समाचारों में कोई प्रगति हुई है और न ही उनकी कुशलता और ठिकाने के बारे में कोई खबर मिली है, जिससे हिरासत में उसकी स्थिति पर कई लोगों को गंभीर चिंता हो रही है।

परम पावन दलाई लामा के खिलाफ चीन के अभियान में हालिया उछाल और तिब्बतियों पर दमन के बीच दरग्ये तिब्बतियों की लंबी विस्तृत सूची में नवीनतम मामला है, जिसे चीनी सरकार द्वारा तनहाई हिरासत में रखा गया और जबरन गायब कर दिया गया था।

• चीनी जेल में बन्दी बनाई गए तिब्बती पर्यावरणविद् गंभीर रूप से मरणासन्न स्थिति में हैं

tibet.net, १३ दिसंबर, २०२१

तिब्बती पर्यावरणविद् ढोंग्ये

तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) के नागचु (चीनी: नाकू) प्रान्त के ढोंग्ये नाम के एक तिब्बती व्यक्ति के 'मरणासन्न स्थिति' में होने की सूचना है। एक विश्वसनीय सूत्र ने बताया कि उसकी हालत गंभीर है क्योंकि वह जेल में लंबे समय तक यातना के कारण लगी चोटों से पीड़ित है।

२०१८ में चीन सरकार द्वारा एक पवित्र तिब्बती पर्वत पर खुदाई कराने की योजना के खिलाफ ड्रिरु (चीनी: बीरू) काउंटी में खनन विरोधी प्रदर्शन के बारे में जानकारियां निर्वासित तिब्बतियों को साझा करने के आरोप के बाद ढोंग्ये को 'सरकारी गोपनीय जानकारी लीक करने' के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। 50 वर्षीय व्यवसायी पर्यावरण संरक्षण के प्रबल समर्थक रहे हैं। उनकी गिरफ्तारी के बाद, उन्हें तनहाई हिरासत में रखा गया था और लंबे समय तक उनके बारे में कोई सूचना सार्वजनिक नहीं की गई। हाल ही में यह पता चला था कि ढोंग्ये को ड्रिरु काउंटी जेल में हिरासत में रखा जा रहा है। उसे सजा दिए जाने के बारे में कोई खबर नहीं आई है, लेकिन वह अभी भी ड्रिरु काउंटी जेल में बंद है।

हमारे सूत्रों के अनुसार, ढोंग्ये पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित हैं और हिरासत में यातना और दुर्व्यवहार के कारण गंभीर रूप से बीमार हैं। अतीत में, उन्होंने कई पर्यावरण कार्यक्रमों का आयोजन किया था और कई अन्य में भाग लिया था। इन आयोजनों के दौरान वह अपनी चिंताओं को व्यक्त करते थे और तिब्बत के पर्यावरण की रक्षा की तत्काल आवश्यकता का आह्वान करते थे। उन्होंने २०१३-२०१४ में सेर्ने गांव में आयोजित 'स्वच्छ पर्यावरण' प्रतियोगिता भी जीती।

ढोंग्ये का जन्म नागचु के ड्रिरु काउंटी के शागचु (चीनी: ज़ियाकू) शहर के ढाकरा गांव में हुआ था।

ड्रिरु काउंटी में शोषणकारी खनन

तिब्बतन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट एंड डेमोक्रेसी की रिपोर्ट के अनुसार,अप्रैल २०१८ में चीनी अधिकारियों द्वारा मार्कोर गांव के नेता कर्मा को हिरासत में लिए जाने और निर्वासित तिब्बती स्रोतों को खनन परियोजना की जानकारी साझा किए जाने की खबर के बाद, मार्कोर, वाथांग और गोचू गांवों से ढोंग्ये सहित ३० तिब्बतियों को हिरासत में लिया था।

रिपोर्ट के अनुसार, कर्मा को फरवरी के अंत में एक आधिकारिक आदेश को चुनौती देने के लिए हिरासत में लिया गया था। आधिकारिक आदेश के द्वारा मार्कोर, वाथांग और गोचू गांवों के सभी निवासियों को मजबूर करके एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करवाया गया जिसके अनुसार स्थानीय अधिकारियों को पवित्र सेबट्रा ज़ाग्येन पर्वत पर खनन करने की अनुमति दे दी गई थी। हालांकि, कर्मा ने खुले तौर पर सरकारी अधिकारियों का यह कहते हुए विरोध किया कि वह दस्तावेज़ पर केवल तभी हस्ताक्षर करेंगे जब वे तेनज़िन और रंगदी जैसे दिग्गज पार्टी नेताओं से इस खनन के लिए अनुमोदन का सबूत पेश करेंगे।

जब कर्मा की गिरफ्तारी की खबर निर्वासित तिब्बतियों तक पहुंच गई तो अधिकारियों ने तुरंत सभी को एक बैठक के लिए बुलाया, जिस दौरान सूचना लीक करने के संदेह में तिब्बतियों को हिरासत में लिया गया।

स्थानीय तिब्बतियों को इस बात की चिंता है कि खनन से पवित्र सेबत्रा ज़ग्येन पर्वत नष्ट हो जाएगा, जो कि त्सो (तिब्बती मृग), नाह (नीली भेड़) और गोवा (तिब्बती गज़ेल) जैसे लुप्तप्राय जानवरों का आवास भी है। इस बात की आशंका थी कि खनन से एक अन्य पवित्र पर्वत ड्रेकर पर भूस्खलन भी हो सकता है, जो कि सेबत्रा ज़ग्येन के दाहिनी ओर स्थित है। इस कारण से स्थानीय ग्रामीणों को पानी की आपूर्ति अवरुद्ध हो जाएगी।

• सांस्कृतिक क्रांति जैसा विध्वंस: चीन ने तिब्बत के ड्रैकगो में एक गगनचुंबी बुद्ध प्रतिमा और ४५ विशाल प्रार्थना चक्रों को ध्वस्त कर दिया

tibet.net, २८ दिसंबर, २०२१

चीनी सरकार ने खाम ड्रैकगो में ९९ फुट ऊंची एक बुद्ध प्रतिमा को ध्वस्त कर दिया

धर्मशाला। हमारे सूत्रों के अनुसार, चीनी सरकार ने सिचुआन प्रांत में शामिल खाम ड्रैकगो में ९९ फुट ऊंची एक बुद्ध प्रतिमा को ध्वस्त कर दिया है। इसके अतिरिक्त, ड्रैकगो मठ के पास खड़े किए गए ४५ विशाल प्रार्थना चक्रों को भी हटा दिया गया है और प्रार्थना झंडे जला दिए गए हैं।

कांस्य प्रतिमा को बड़े प्रयास से ड्रैकगो में स्थानीय तिब्बतियों के उदार योगदान के पैसे से एक चौराहे पर बनाया गया था, जिसकी लागत लगभग ४०,०००,००० युआन (लगभग ६३ लाख अखेरिकी डॉलर) थी। १९७३ में ड्रैकगो में बड़े पैमाने पर भूकंप आया, जिससे कई हजार लोगों की मृत्यु हो गई और व्यापक स्तर पर क्षति हुई। ९९फुट ऊंची बुद्ध प्रतिमा का निर्माण ५ अक्तूबर २०१५ को भविष्य में प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए किया गया था।

हमारे सूत्रों के अनुसार, कांस्य प्रतिमा का निर्माण जिला कार्यालय से सभी अनुमतियों के बाद किया गया था और उस समय स्थानीय अधिकारियों से प्रशंसा भी मिली थी। हालांकि, पिछले दो-तीन वर्षों में क्षेत्र का दौरा करने वाले उच्च अधिकारियों ने मूर्ति के बड़े आकार की आलोचना की थी। हाल ही में १२ दिसंबर २०२१ को काउंटी के अधिकारियों ने दस्तावेजों को अमान्य करने के बाद इसे ध्वस्त करने का आदेश दिया और दावा किया कि इतनी ऊंचाई की मूर्ति निषिद्ध है।

लेकिन ४५प्रार्थना चक्रों को नष्ट करने और आसपास के क्षेत्र में प्रार्थना झंडे को जलाने में इन दलीलें का औचित्य साबित नहीं किया जा सकता है। इन चक्रों के निर्माण में लगभग १८,००,००० युआन (लगभग २,८२,५०० अमेरिकी डॉलर) की लागत आई थी।

बौद्ध प्रतिमाओं और संरचनाओं को तोड़ना तिब्बतियों की सदियों पुरानी परंपराओं पर सीधा हमला है, जिसमें किसी की किस्मत को ऊपर उठाने के लिए प्रार्थना झंडे लगाना, दुर्भाग्य को दूर करने के लिए धार्मिक ढांचे को खड़ा करना और दूसरों की भलाई के लिए मंत्रों के जाप करने के लिए प्रार्थना चक्रों को घुमाना शामिल है। हमारे सूत्रों ने कहा, 'चीनी अधिकारियों द्वारा ये कृत्य तिब्बती धर्म, भाषा और संस्कृति पर तीव्र हमले हैं। तिब्बती बौद्ध धर्म पर विध्वंसात्मक कार्रवाई और ड्रैकगो की स्थिति अब सांस्कृतिक क्रांति के समय की तरह है। क्षेत्र में सूचना प्रवाह पर कड़े नियंत्रण के कारण हम इस समय वास्तविक विनाश के चित्र और वीडियो प्राप्त करने में असमर्थ हैं।'

पिछले महीने, ड्रैकगो मठ के गादेन नामग्याल मोनास्टिक स्कूल को उचित दस्तावेज न होने और भूमि उपयोग कानून का उल्लंघन करने के झूठे आधार पर ध्वस्त कर दिया गया था। स्कूल को वास्तव में इसलिए निशाना बनाया गया था, क्योंकि यह अपनी स्थापना के बाद से क्षेत्र में शिक्षा के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करने लगा था। इसमें तिब्बती बौद्ध धर्म, तिब्बती भाषा, चीनी मंदारिन और अंग्रेजी सहित कई विषयों की पढ़ाई हो रही थी। स्कूल बंद होने के बाद, इसके १३० छात्रों को अन्य स्कूलों में प्रवेश या नामांकन नहीं मिल सका और उन्हें अपने गांवों में लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। चीनी सरकार ने तिब्बती लोगों के मौलिक अधिकारों का पूरी तरह से उल्लंघन किया है। इनमें धार्मिक अधिकार, भाषा के अधिकार और अपनी संस्कृति और परंपरा के संरक्षण और पालन का अधिकार शामिल हैं।

• ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया गया, श्री सुजीत कुमार को नया संयोजक नियुक्त किया गया

tibet.net, २३ दिसंबर, २०२१

ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत के संसदीय प्रतिनिधिमंडल

नई दिल्ली। तिब्बत के संसदीय प्रतिनिधिमंडल द्वारा कई दिनों तक लगातार सम्पर्क करने के बाद ऑल-पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत (एपीआईपीएफटी) को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया गया है। संसदीय प्रतिनिधिमंडल के अभियान में शामिल ३८ सांसदों में सेर्टा त्सुल्ट्रिम, गेशे ल्हारम्पा गोवो लोबसंग फेंडे, लग्यारी नामग्याल डोलकर, गेशे एटोंग रिनचेन ग्यालत्सेन और चोएडक ग्यात्सो थे। २१ दिसंबर को निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने दिल्ली का दौरा किया और २२ दिसंबर की सुबह अध्यक्ष ने दिल्ली में परम पावन दलाई लामा ब्यूरो के प्रतिनिधि सचिव, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों और आईटीसीओ के निदेशक के साथ बैठक की अध्यक्षता की। बाद में शाम को भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) के समन्वय में निर्वासित तिब्बती संसद ने द इम्पीरियल होटल, नई दिल्ली में एपीआईपीएफटी सदस्यों के लिए रात्रिभोज का आयोजन किया।

रात्रिभोज के स्वागत के दौरान ऑल-पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत के पुनरुद्धार की आधिकारिक रूप से घोषणा की गई, जिसमें ओडिशा से राज्यसभा के माननीय सांसद श्री सुजीत कुमार को सर्वसम्मति से फोरम का संयोजक नियुक्त किया गया।

रात्रिभोज बैठक में स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल, भारत के कौशल विकास और उद्यमिता और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री राजीव चंद्रशेखर, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री श्री रामदास अठावले, कर्नाटक से राज्यसभा सदस्य श्री के.सी. राममूर्ति, लोकसभा सदस्या श्रीमती मेनका गांधी, बिहार से लोकसभा सदस्य श्री जनार्दन सिंह सिग्रीवाल, पश्चिम बंगाल से राज्यसभा सदस्य श्री स्वपन दासगुप्ता, ओडिशा से राज्यसभा सदस्य श्री सुजीत कुमार, कर्नाटक से राजसभा सदस्य श्री जयराम रमेश, पंजाब से लोकसभा सदस्य श्री मनीष तिवारी, बिहार से लोकसभा सदस्य श्री चंदेश्वर प्रसाद, हिमाचल से लोकसभा सदस्य श्रीमती रानी प्रतिभा सिंह, प्रतिनिधिमंडल के सदस्य, निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य कुंचोक यांगफेल, कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक और भारतीय संसद के पूर्व सदस्य श्री आर.के. खिरमे, आईटीसीओ के निदेशक और कर्मचारी शामिल हुए।

इस बैठक की शुरुआत आईटीसीओ के निदेशक जिग्मे त्सुल्ट्रिम द्वारा ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंट्री फोरम फॉर तिब्बत का परिचय, इसके गठन और विकास के बारे में जानकारी देने के साथ साथ हुई। इसके बाद स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल, सांसद लग्यारी नामग्याल डोलकर, एपीआईपीएफटी के संयोजक श्री सुजीत कुमार और कर्नाटक के राज्यसभा सदस्य श्री जयराम रमेश ने मुख्य भाषण दिए।

स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने अपने संबोधन में तिब्बत और तिब्बती मुद्दों के लिए भारतीय सांसदों के अटूट समर्थन की सराहना की और पिछले ६०से अधिक वर्षों से परम पावन दलाई लामा और तिब्बतियों की मेजबानी के लिए सरकार और भारत के लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने आगे तिब्बत के मुद्दे के लिए भारत

विशेष रूप से ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंट्री फोरम फॉर तिब्बत के समर्थन के महत्व पर प्रकाश डाला। संसद के अंदर और बाहर सांसदों के निरंतर समर्थन का आग्रह करते हुए स्पीकर ने भारतीय सांसदों से तिब्बती कार्यक्रमों और समारोहों में शामिल होने की अपील की।

उन्होंने आगे पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के क्रूर शासन के तहत तिब्बत के अंदर तिब्बतियों की पीड़ा की कहानी बयां की, जहां वे धर्म, संस्कृति, भाषा आदि के अधिकार सहित बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित हैं। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि दुनिया की छत कहे जाने वाले तिब्बत का अकल्पनीय पर्यावरणीय विनाश हो रहा है जिसके गंभीर परिणाम भारत सहित पड़ोसी देशों को भुगतने होंगे। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कामकाज को जानने और समझने के लिए स्पीकर ने एपीआईपीएफटी के सदस्यों को धर्मशाला आने का निमंत्रण दिया।

सांसद लग्यारी नामग्याल डोलकर ने प्रतिनिधिमंडल की ओर से भारतीय मंत्रियों, सांसदों और अधिकारियों को अभियान के दौरान गर्मजोशी से स्वागत करने के लिए आभार व्यक्त किया और भविष्य के तिब्बती संसदीय अभियानों के लिए उनके निरंतर समर्थन का आग्रह किया। उन्होंने परम पावन दलाई लामा, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बतियों की मेजबानी करने के लिए भारत और उसके लोगों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा करने के बाद भारत पिछले छह दशकों में तिब्बतियों का घर बन गया है और यहां उपलब्ध कराई गई सभी सुविधाओं और सहायताओं के लिए तिब्बती हमेशा भारत के ऋणी रहेंगे। उन्होंने अंततः भारतीय संसद सदस्यों से भारतीय संसद में तिब्बत से संबंधित प्रस्तावों को पेश करने और उन्हें पारित कराने की अपील की।

इसके बाद, एपीआईपीएफटी के संयोजक श्री सुजीत कुमार ने बताया कि कैसे 'बीजू जनता दल' का नाम ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बीजू पटनायक के नाम पर रखा गया, जो तिब्बत के प्रबल समर्थक थे। सांसद ने आगे बताया कि उन्हें परम पावन दलाई लामा का दर्शन करने का अवसर मिला और वे १२ वर्षों से अधिक समय से परम पावन के अनुयायी हैं। २००९ में तिब्बत का दौरा करने वाले एपीआईपीएफटी के संयोजक ने दृढ़ता से विरोध किया कि तिब्बत कभी चीन का हिस्सा नहीं था और भारत चीन के साथ सीमा साझा नहीं करता है। उन्होंने भारतीय संसद में अमेरिकी तिब्बत नीति और समर्थन अधिनियम जैसी नीति अपनाने की आवश्यकता और परम पावन को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित करने का आह्वान किया।

अंत में, श्री जयराम रमेश (कर्नाटक से राज्यसभा सदस्य), जिनकी तिब्बत की संस्कृति, विचारधारा, इतिहास और पर्यावरण के बारे में गहरी रुचि और ज्ञान है, ने राजनीति के अलावा संस्कृति और पर्यावरण के संदर्भ में भारत के लिए तिब्बत मुद्दे के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने आगे बौद्ध धर्म पर अपनी पुस्तक के बारे में बताया और कहा कि पुस्तक की प्रस्तावना परम पावन दलाई लामा से पाकर वे कितने प्रसन्न हैं। रात्रिभोज की बैठक तिब्बती सांसदों और भारतीय सांसदों के बीच चर्चा के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

• भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने १०वीं तवांग तीर्थ यात्रा को झंडी दिखाकर रवाना किया

tibet.net, ४ दिसंबर २०२१

भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) द्वारा आयोजित १०वीं तवांग तीर्थ यात्रा

दिल्ली। भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) द्वारा आयोजित १०वीं तवांग तीर्थ यात्रा को ०१ दिसंबर २०२१ को असम की राजधानी गुवाहाटी से झंडी दिखाकर रवाना किया गया था। बीटीएसएम के संरक्षक और वरिष्ठ आरएसएस प्रचारक माननीय श्री इंद्रेश कुमार जी ने ०१ दिसंबर से ०७ दिसंबर, २०२१ तक चलने वाली यात्रा में भाग लेने वाले यात्रियों को अपनी शुभकामनाएं और आशीर्वाद देकर यात्रा का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर असम विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ नुमोल मोमिन, भारत-तिब्बत सहयोग मंच के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री हरजीत सिंह ग्रेवाल, उपाध्यक्ष श्री रिनचेन खांडो खिरमे (पूर्व सांसद और मंत्री, अरुणाचल प्रदेश सरकार), सीटीए के सुरक्षा विभाग के कालोन ग्यारी डोलमा, पूर्वोत्तर भारत के लिए भाजपा के संगठन सचिव श्री अजय जामवाल, बीटीएसएम महासचिव श्री पंकज गोयल, गुवाहाटी विधायक श्री हेमांग ठकारिया, मेघालय के राजा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

गुवाहाटी से शुरू हुई १०वीं तवांग तीर्थ यात्रा बोमडिला, दिरांग, सेला दर्रा, जसवंतगढ़ वाया भालुकपोंग, नगांव और तेजपुर होते हुए तवांग पहुंचेगी, जिसे सूर्योदय की धरती अरुणाचल प्रदेश की भूमि का प्रवेश द्वार कहा जाता है।

तवांग पहुंचने पर यात्री प्रसिद्ध तवांग मठ के दर्शन करेंगे और अपनी आगे की यात्रा के लिए वहां से आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। अगले दिन, वे बुमला में भारत-तिब्बत सीमा का दौरा करेंगे। वहां वे भारत मां की क्षेत्रीय अखंडता के लिए धरती की पूजा करते हुए धरती पूजन करेंगे। अपनी वापसी यात्रा में यात्री माधुरी झील और जंग जल प्रपात के नाम से प्रसिद्ध संगेसर त्सो का दौरा करेंगे और अंत में गुवाहाटी, असम में यात्रा का समापन होगा।

तवांग तीर्थ यात्रा भारत-तिब्बत सहयोग मंच के प्रमुख वार्षिक आयोजनों में से एक रही है, जिसका उद्देश्य कम्युनिस्ट चीन को यह याद दिलाना है कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है और कम्युनिस्ट चीन द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे को उजागर करना है। इसका नारा है 'तिब्बत की आजादी, कैलाश मानसरोवर की मुक्ति और भारत की सुरक्षा'।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच माननीय श्री इंद्रेश कुमार और माननीय श्री सुदर्शन के नेतृत्व में ५ मई, १९९९ को अपनी स्थापना के बाद से तिब्बती हित के सबसे मजबूत समर्थकों में से एक रहा है।

• भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३२वीं वर्षगांठ मनाई

tibet.net, १२ दिसंबर, २०२१

तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३२वीं वर्षगांठ मानते हुए

परम पावन १४वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३२वीं वर्षगांठ १० दिसंबर २०२१ को दुनिया भर में मनाई गई। इसी तरह, भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने भी इस दिन को धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया और साथ ही साथ तिब्बत के मुद्दे को आम जनता के सामने उजागर करने के लिए गतिविधियों और कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस दिन को अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

गुजरात के अहमदाबाद में 'इंडिया-तिब्बत फ्रेंडशिप सोसाइटी (आईटीएफएस)' ने तिब्बती स्वेटर मार्केट एसोसिएशन के सहयोग से इस अवसर पर 'रिवरफ्रंट तिब्बती स्वेटर मार्केट' में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। अहमदाबाद नगर निगम के महापौर श्री किरीटभाई परमार और एमजे पुस्तकालय के सदस्य श्री हेमंत भट्ट ने मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान आईटीएफएस अहमदाबाद के कार्यकारी और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक डॉ. महेंद्र संघपाल और डॉ.अमित ज्योतिकर अन्य तिब्बत समर्थकों और तिब्बती स्वेटर विक्रेताओं के साथ कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

राजस्थान के जोधपुर में तिब्बती स्वेटर मार्केट एसोसिएशन के साथ आईटीएफएस ने इस दिन को एक कार्यक्रम आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता आईटीएफएस जोधपुर जिला अध्यक्ष श्रीमती रेशम बाला ने की। तिब्बती स्वेटर मार्केट एसोसिएशन की अध्यक्षा सुश्री कलसांग ने तिब्बती शरणार्थियों को समर्थन और सहयोग के लिए जोधपुर के लोगों को धन्यवाद दिया।

झारखंड के हजारीबाग में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक श्री सुदेश कुमार के नेतृत्व में आईटीएफएस ने एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें सैकड़ों बुद्धिजीवियों और तिब्बत समर्थकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग के कुलसचिव डॉ. बंसीधर रुखैयार थे।

बिहार के मुजफ्फरपुर में आईटीएफएस ने इस अवसर पर एम.पी.एस. साइंस कॉलेज में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री सुरेंद्र कुमार के नेतृत्व में 'मानव अधिकार और तिब्बत' शीर्षक से एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

कर्नाटक के मैसूर में आईटीएफएस सदस्य और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक श्री जे.पी.उर्स ने मैसूर तिब्बती छात्रसंघ और तिब्बत समर्थकों के साथ मिलकर इस दिन को मनाया।

महाराष्ट्र के भंडारा में आईटीएफएस ने प्रमुख स्थानीय गणमान्य नागरिकों, तिब्बत समर्थकों और तिब्बती स्वेटर विक्रेताओं की उपस्थिति में यह दिन मनाया। आईटीएफएस नागपुर के अध्यक्ष श्री अमृत बंसोड़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और सदस्यों ने परम पावन दलाई लामा के लंबे जीवन और अच्छे स्वास्थ्य और तिब्बत मुक्ति साधना की सफलता के लिए प्रार्थना की।

कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक और आईटीएफएस नागपुर के सदस्य श्री संदेश मेश्राम ने इस शुभ अवसर पर कर्नाटक के मुंडगोड तिब्बती सेटलमेंट से 'तिब्बत की आजादी, भारत की सुरक्षा' के संदेश के साथ 'जनजागरण साइकिल यात्रा (दक्षिण भारत)' की शुरुआत की। साइकिल यात्रा दक्षिणी राज्यों- कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी से होते हुए लगभग २४०० किलोमीटर की दूरी तय करेगी और १२ जनवरी २०२२ को बेंगलुरु, कर्नाटक में समाप्त होगी।

दिल्ली में भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) ने इस अवसर पर तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन को उजागर करने और तिब्बत को कम्युनिस्ट चीन की बुरी पकड़ से मुक्त करने के लिए 'मानवाधिकार बाइक रैली' का आयोजन किया। माननीय सांसद श्री दुष्यंत गौतम ने सदैव अटल स्थल से रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया जो मजनुं का टीला तिब्बती कॉलोनी में संपन्न हुई। इसके बाद सदस्य परम पावन १४वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३२वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। शाम को बीटीएसएम ने अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक वेबिनार आयोजित किया जिसमें कई देशों के वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

अरुणाचल प्रदेश के बोमडिला और तवांग में भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने स्थानीय लोगों के साथ क्रमशः बोमडिला जिला मुख्यालय और तवांग मठ में परम पावन १४वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किए जाने की ३२वीं वर्षगांठ मनाई।

उत्तर प्रदेश के मेरठ में अंतरराष्ट्रीय भारत-तिब्बत सहयोग समिति (एबीटीएसएस) ने सरस्वती शिशु मंदिर, कंकरखेड़ा में परम पावन दलाई लामा पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें १२ स्कूलों ने भाग लिया। एबीटीएसएस के कार्यकारी और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक श्री रवि बख्शी, श्री मुकेश गुप्ता, श्री आशीष अग्रवाल और श्री शील वर्धन ने बहुत ही सुनियोजित तरीके से कार्यक्रम का सफलतापूर्वक प्रबंधन किया।

पश्चिम बंगाल के सालुगाड़ा में 'हिमालयन कमेटी फॉर एक्शन ऑन तिब्बत (हिमकैट)' ने कालचक्र फोडंग में इस दिन को मनाया। इस अवसर पर हिमकैट के अध्यक्ष वेन लामा चोस्फेल ज़ोटपा और हिमकैट के महासचिव श्री सोनम लुंडुप लामा ने स्कूली बच्चों और हिमालयन बौद्ध सांस्कृतिक स्कूल के कर्मचारियों के साथ उपस्थित थे।

सिक्किम के गंगटोक में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक श्री पेमा वांगदा भूटिया ने तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय द्वारा आयोजित परम पावन १४वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३२वीं वर्षगांठ में भाग लिया। इस कार्यक्रम में सिक्किम सरकार के कई गणमान्य हस्तियों ने भी भाग लिया।

कर्नाटक के बेंगलुरु में बीटीएसएम और आईटीएफएस सदस्यों सहित बेंगलुरु में भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों ने 'बीजिंग ओलंपिक २०२२ का बहिष्कार करें' का

संदेश देते हुए इस अवसर पर तिब्बती युवा कांग्रेस द्वारा आयोजित बेंगलुरु से दिल्ली तक की बाइक रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इसी तरह, महाराष्ट्र के परभणी और भारत के कई अन्य स्थानों में तिब्बत समर्थक समूहों ने अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के अवसर पर परम पावन १४वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३२वीं वर्षगांठ मनाई।

• गोल्डन इंडिया पब्लिक स्कूल ने वाराणसी के दुर्गाकुंड में 'ए डे फॉर तिब्बत' कार्यक्रम आयोजित किया

tibet.net, १२ दिसंबर, २०२१

गोल्डन इंडिया पब्लिक स्कूल के शिक्षक और छात्र

वाराणसी। इंडिया तिब्बत फ्रेंडशिप सोसाइटी, उत्तर प्रदेश के राज्य सचिव डॉ. अंजनी कुमार मिश्रा अपने मुद्रण और प्रकाशन के पेशे के अलावा भारत के तिब्बत के साथ साझा संबंधों के ज्ञान के प्रदर्शन में भी सक्रिय रुप से शामिल रहे हैं। इस दिशा में उनके प्रयास से गोल्डन इंडिया पब्लिक स्कूल (जीआईपीएस) के निदेशक डॉ. विनोद चतुर्वेदी की अनुमति से काशी के सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों के केंद्र में से एक दुर्गाकुंड में 'ए डे फॉर तिब्बत' शीर्षक से 'चीन-भारत के संबंध में तिब्बत का मुद्दा' शीर्षक से एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। काशी को वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है। यह कार्यक्रम गुरुवार, ०९ दिसंबर २०२१ को आयोजित किया गया था।

जीआईपीएस में समाजशास्त्र पढ़ाने वाले श्री रामाज्ञा पांडेय ने अतिथियों का परिचय कराया। अतिथियों में आईटीएफएस यूपी राज्य के सचिव डॉ. अंजनी कुमार मिश्रा, सोसाइटी फॉर इंडो-तिब्बतन बौद्ध अध्ययन के कोषाध्यक्ष श्री अशोक उपाध्याय और आईटीसीओ के समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम शामिल थे। जीआईपीएस के निदेशक डॉ. विनोद चतुर्वेदी ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए इस आयोजन के महत्व पर जोर दिया और सभी छात्रों और संकायों से पूरे विवेक के साथ सुनने का आग्रह किया। डॉ अंजनी कुमार मिश्रा ने श्रोताओं को इस आयोजन के उद्देश्यों और लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी और उन स्कूलों और संस्थानों के नाम भी बताए जहां अतीत में यह आयोजन हुआ था। डॉ. मिश्रा ने आईटीएफएस (इंडो तिब्बत फ्रेंडशिप सोसाइटी) की ऐतिहासिक यात्रा की रुपरेखा बताई, जिसमें उन कई महान शख्सियतों का उल्लेख आया, जिन्होंने आईटीएफएस के तहत भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर युवाओं के बीच भारत-तिब्बत संबंधों को मजबूत करने के मुख्य उद्देश्य के लिए अपना योगदान दिया था।

डॉ.राजनारायण तिवारी ने हर किसी की सांस्कृतिक और सामाजिक जड़ों के बारे में जानने के महत्व पर जोर दिया जो किसी की पहचान की नींव होता है जो दृश्यमान, जीवंत और जोरदार हो सकता है। डॉ. तिवारी ने छात्रों से आग्रह किया कि वे तिब्बतियों ने जो खोया है, उसे जाने और सीख लें। इसके साथ ही तिब्बतियों द्वारा अपनी पहचान को वापस पाने के लिए इतने वर्षों से किए जा रहे के संघर्ष से भी सीखे। इस सीख के माध्यम से यह भी देखें कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान झेले गए कष्टों और उसके रास्तों से किस तरह से तुलना की जा सकती है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आईटीसीओ के समन्वयक ने सबसे पहले प्रबंधन, संकाय और छात्रों, विशेष रुप से डॉ.अंजनी कुमार मिश्रा को इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बात को सामने रखा कि कैसे तिब्बतियों ने समुद्र तल से १३,००० फीट से समुद्र तल से २५० फीट की ऊंचाई से १९५९ से आज तक की अपनी यात्रा के दौरान संघर्ष किया। उन्होंने अपने संबोधन के दौरान तिब्बत के भीतर रह रहे तिब्बतियों की आकांक्षाएं और प्रतिबद्धता, निर्वासन में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की नीति और कार्यान्वयन, इस जानकारी की पहुंच और भारतीय जनता से समर्थन जैसे कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को भी उन्होंने छुआ।

श्री रामज्ञा पाण्डेय ने अपनी टिप्पणी करते हुए और अधिक विवेक के साथ रेखांकित किया कि बच्चों के लिए वर्तमान शैक्षिक संस्कृति के सादे कागज पर एक टेढ़ी-मेढ़ी रेखा खींची जा रही है। इससे शायद ही कभी बच्चे उस ज़िग-ज़ैग रेखा को एक सीधी रेखा में बदलना संभव कर पाएंगे। यह कार्यक्रम लगभग ११:३० बजे शुरु हुआ और छात्रों के प्रश्नोत्तर के साथ १४:३० बजे समाप्त हुआ। इसके बाद गोल्डन इंडियन पब्लिक स्कूल की प्राचार्या श्रीमती ममता शर्मा ने सभी लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

• महामती प्राणनाथ पीजी कॉलेज ने यूपी के मऊ और चित्रकूट में 'ए डे फॉर तिब्बत' का आयोजन किया

tibet.net, १२ दिसंबर, २०२१

महामती प्राणनाथ पीजी कॉलेज के शिक्षक और छात्र

मऊ(चित्रकूट)। मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा के पास जहां उत्तर प्रदेश के मैदानों के खेत और वनस्पतियों के बजाय झाड़ियों और पौधों के साथ छोटी पहाड़ियों का इलाका शुरु होने लगता है, यहां पर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व का चित्रकूट धाम अवस्थित है। उत्तर प्रदेश के इस चित्रकूट जिले की एक तहसील मऊ के महामती प्राणनाथ पीजी कॉलेज में 'ए डे फॉर तिब्बत' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के पूर्वी और मध्य यूपी के क्षेत्रीय संयोजक श्री सुंदरलाल सुमन यहां अपने सामाजिक और सामुदायिक सेवा कार्यों के अलावा, तिब्बत के साथ भारत के संबंधों के बारे में लोगों में जागरुकता फैलाने और तिब्बत मुद्दे को प्रचारित करने में भी सक्रिय रुप से शामिल रहे हैं। उन्हीं के प्रयास और योजना के मुताबिक, उक्त परिसर में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महामती प्राणनाथ पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ संतोष कुमार चतुर्वेदी ने कायक्रम में आए केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान सारनाथ में बौद्ध दर्शन संकाय के डॉ रमेश चंद्र नेगी, पी.एच.डी. के छात्र भिक्षु तेनज़िन न्यिमा और आईटीसीओ के समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम के साथ अन्य सभी अतिथियों का स्वागत किया।

दिवंगत माता बादल जायसवाल द्वारा १९७४में स्थापित एमएमपीएन पीजी कॉलेज को इस आयोजन के उत्सव के लिए इसके प्रवेश द्वार से आयोजन स्थल तक एक नया रुप दिया गया था। कार्यक्रम के लिए कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे समारोह के मुख्य अतिथि एमएमपीएन के राजनीति विज्ञान विभाग के डॉ. एस. कुनिल ने सरस्वती वंदना प्रार्थना के बाद यूपी के इस ग्रामीण इलाके में आज के आयोजन के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला। श्री सुंदरलाल सुमन ने पारंपरिक माला पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर अतिथि वक्ताओं का परिचय कराया। उन्होंने भारत और तिब्बत विषय पर आयोजित की गई निबंध प्रतियोगिता के बारे में बताया, जिसमें कॉलेज के ३०छात्रों ने भाग लिया था। चूंकि इसे खुला रखा गया था और जबरदस्ती नहीं किया गया था, इसलिए आगे बढ़ते हुए उन्होंने कहा कि उन निबंधों की उच्च स्तरीय गुणवत्ता को देखते हुए पुरस्कार के लिए उनमें से कुछेक का चयन करने का उनका मन नहीं हुआ। इसलिए उन्होंने सभी को उनके बेहतर प्रयास के लिए सम्मानित करने का फैसला किया। इस प्रकार, इन सभी छात्रों को स्मारिका का टोकन देकर सम्मानित किया गया जो कम से कम तिब्बत पर कुछ संलग्न करने के लिए उनकी स्मृति के रुप में काम करेगा। उन्होंने स्पष्ट रुप से रेखांकित किया कि आज के कार्यक्रम की योजना न केवल निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण के लिए बल्कि परम पावन दलाई लामा के नोबेल शांति पुरस्कार दिवस समारोह के साथ-साथ सार्वभौमिक मानवाधिकार दिवस के उत्सव के लिए भी बनाई गई थी।

इसके अलावा, वाराणसी के सारनाथ स्थित सीआईएचटीएस में बौद्ध अध्ययन संकाय के डॉ रमेश चंद्र नेगी ने तिब्बत के साथ भारत के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक संबंध के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने आधुनिक शिक्षा की व्यावहारिकताओं का पालन करते हुए पारंपरिक ज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला। ऐसा कहकर उन्होंने मानवीय मूल्यों की शिक्षा का संकेत दिया जिसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विभिन्न रुपों में बंटा हुआ दिखाई देता है।

डॉ.नेगी ने संकाय से आग्रह किया कि एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जाए जिसमें छात्रों को न केवल आज के लोकप्रिय संस्थानों और कॉलेजों के बारे में बल्कि नालंदा और तक्षशिला जैसे अतीत के संस्थानों के बारे में भी पता चलेगा जो भारत की शिक्षा और नैतिकता के केंद्र रहे हैं। उन्होंने आगे अनंत ज्ञान स्रोत के विस्तार की संभावना के बारे में प्रकाश डाला, जिसे आज की प्रौद्योगिकी ने अधिक सुलभ बना दिया है।

इस संबंध में क्रमशः तिब्बत के साथ भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक सीमाओं और पारिस्थितिकीय महत्व को जानने के दृष्टिकोण को साझा करते हुए आईटीसीओ के समन्वयक ने अपने संबोधन में मऊ जैसी जगह में इस ऐतिहासिक यात्रा में सहयोग करने के लिए कॉलेज, इसके प्राचार्य, प्रशासनिक सदस्यों और उनके सहयोगियों का बहुत धन्यवाद दिया। उन्होंने तिब्बत के इतिहास के शुरुआती दिनों से लेकर १९५० के दशक में विस्तारवादी कम्युनिस्ट चीन का शिकार नहीं होने तक तिब्बती लोगों के रंगीन जीवन के बारे में छात्रों को जानकारी दी।

कार्यक्रम के अंत में एमएमपीएन के प्राचार्य डॉ.संतोष कुमार चतुर्वेदी ने एक हिंदी कविता पढ़ी जो मूल रुप से भुचुंग डी. सोनम द्वारा लिखी गई थी, जो तिब्बती लोगों को अपनी मातृभूमि से अलग होने के दर्द को बयां करती है। फैकल्टी सदस्यों के साथ लगभग ५००छात्रों ने इस सत्र में भाग लिया और प्रश्नोत्तर के साथ कार्यक्रम को फलदायक बना दिया। इन छात्रों (विशेषकर अभिषेक, गीतांजलि, निकिता, शिबू दुबे और अन्य सहित छात्रों से) द्वारा किए गए प्रश्नों में वास्तविक चिंताओं, भावों और जिज्ञासाओं को देखा गया। कार्यक्रम ११:३० बजे शुरु हुआ और १४:३० बजे समाप्त हुआ।

• जन जागरण साइकिल यात्रा फिर शुरू

tibet.net, १३ दिसंबर, २०२१

श्री संदेश मेश्राम

भारत में तिब्बत समर्थक समूहों के शीर्ष निकाय कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) के क्षेत्रीय संयोजकों में से एक, भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) के नागपुर के सदस्य और तिब्बत के लंबे समय के मित्र श्री संदेश मेश्राम ने १० दिसंबर २०२१ को कर्नाटक के मुंडगोड से 'तिब्बत की आजादी, भारत की सुरक्षा' के संदेश के साथ दक्षिण भारत जन जागरण साइकिल यात्रा शुरु की। यह साइकिल यात्रा दक्षिणी राज्यों- कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी से होते हुए १२ जनवरी, २०२२ को कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में समाप्त होगी।

इससे पहले श्री मेश्राम ने २०१४, २०१६, २०१७ और २०१९ तक कुल १३,७७० किलोमीटर की दूरी तय करते हुए साइकिल यात्रा का आयोजन किया है। २०१९ में श्री मेश्राम की चौथी जन जागरण साइकिल यात्रा केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी से भी गुजरने वाली थी, लेकिन यात्रा के दौरान श्री मेश्राम की स्वास्थ्य समस्या के कारण उन्हें इन दक्षिणी राज्यों को छोड़कर यात्रा को पुनर्निर्धारित करना पड़ा। इसलिए, उन्होंने तिब्बती मुद्दे के लिए अपने अधूरे अभियान को पूरा करने के लिए साइकिल रैली जन जागरण साइकिल यात्रा (दक्षिण भारत) का आयोजन किया है।

उनकी साइकिल यात्रा का मुख्य उद्देश्य तिब्बत और विशेष रुप से दक्षिण भारत के लोगों में चीनी कम्युनिस्ट सरकार द्वारा तिब्बत के क्रूर कब्जे की इसकी कठोर वास्तविकताओं के बारे में आम जनता के बीच जागरुकता पैदा करना है। यह साइकिल यात्रा भारत और तिब्बत के बीच सदियों पुराने संबंधों को फिर से मजबूत करने और जनता को यह बताने के लिए है कि भारत की सीमा चीन के साथ नहीं, बल्कि तिब्बत के साथ लगती है।

श्री संदेश मेश्राम ने १४वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार और १० दिसंबर २०२१को अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के शुभ अवसर पर मुंडगोड तिब्बती बस्ती से जन जागरण साइकिल यात्रा फिर से शुरु की है। डोएगुलिंग तिब्बती बस्ती के अधिकारी श्री लखपा त्सेरिंग ने इस यात्रा का संक्षिप्त परिचय और मकसद बताया। श्री संदेश मेश्राम उर्फ समतेन येशी को बंदोबस्त अधिकारी श्री लखपा त्सेरिंग, सांसद गेशे अटुक त्सेटेन, कोर ग्रुप फॉर तिब्बती कॉज-इंडिया के राष्ट्रीय सह-संयोजक अमृत जोशी और डोएगुलिंग तिब्बती बस्ती मुंडगोड के समाज और मठों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

• भारत तिब्बत संवाद मंच ने 'तिब्बत पर सांस्कृतिक कार्यक्रम' का आयोजन किया

tibet.net, २७ दिसंबर, २०२१

कुशीनगर। कुशीनगर में भूतपूर्व प्रधनमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपयी जी की जयन्ती के अवसर पर भारत में तिब्बत समर्थक समूहों में से एक 'भारत तिब्बत संवाद मंच' के क्षेत्रीय संयोजक डॉ. शुभलाल शाह, आईटीसीओ समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम,

सांसद श्री विजय कुमार दुबे और विधायक श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी

नामग्याल मठ, कुशीनगर के भिक्षु कुंचोक तेनक्योंग, कुशीनगर के विधायक श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी की उपस्थिति में एक कार्यक्रम रखा गया। इसका मकसद कम्युनिस्ट चीन के पंजे में जकड़े हुए तिब्बत के बारे में भारतीय लोगों को, विशेष रुप से युवाओं को तिब्बती संस्कृति की विशिष्टता के बारे में जानकारी देने के लिए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम कुशीनगर में शुरु किया जाना था।

उक्त विचार को आगे बढ़ाते हुए भारत-तिब्बत संवाद मंच ने भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, दिल्ली के सहयोग से बुद्ध पीजी कॉलेज, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश में तिब्बत समर्थक और पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी की ९७वीं जयंती के अवसर पर २५ दिसंबर, २०२१ की शाम को 'तिब्बत पर सांस्कृतिक कार्यक्रम' का आयोजन किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुशीनगर के माननीय संसद सदस्य श्री विजय कुमार दुबे, विशिष्ट अतिथि कुशीनगर के विधायक श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी, सम्मानित अतिथि नामग्याल मठ, कुशीनगर के प्रमुख लामा वेन. कुंचोक तेनक्योंग, बुद्ध पीजी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य दया शंकर त्रिपाठी, गणित विभाग के प्रमुख डॉ. सी.एस.सिंह, संस्कार भारती के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ आशीष यादव, अति वरिष्ठ मेडिकल सर्जन डॉ.सी.पी.गुप्ता, संस्कार भारती के कुशीनगर जिला अध्यक्ष डॉ. अनिल सिन्हा के अलावा श्रीलंका, थाईलैंड, कोरिया के प्रतिनिधि और वेन. महेंद्र बंटे आदि उपस्थित थे।

पश्चिम बंगाल के कलिम्पोंग स्थित एक तिब्बती प्रदर्शन कला समूह गंगजोंग दोघर के कलाकारों द्वारा प्रवेश द्वार से मंच तक मेहमानों का स्वागत किया गया। ये कलाकार तिब्बत की समृद्ध और जीवंत संस्कृति काप्रदर्शन करने के लिए पवित्र बौद्ध तीर्थ शहर और भगवान बुद्ध की परिनिर्वाण स्थली कुशीनगर आए थे।

कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करने के साथ हुई। इसके बाद परम पावन १४वें दलाई लामा और भारत रत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी के चित्रों पर एक- एक पवित्र सफेद दुपट्टा 'खटक' अर्पित की गई।

आईटीसीओ समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम ने कार्यक्रम के उद्देश्यों का परिचय दिया और उन पर प्रकाश डाला।

गंगजोंग दोघर के कलाकारों ने विभिन्न प्रकार के तिब्बती गीतों और नृत्यों का प्रदर्शन करके दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया। उनके प्रदर्शन का मुख्य आकर्षण स्नो लायन डांस था जो सभी को बहुत पसंद आया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में संस्कार भारती, कुशीनगर के कलाकारों की प्रस्तुतियां भी देखी गईं। यह कुल मिलाकर, भारत और तिब्बत के बीच सदियों पुराने पवित्र संबंधों को दर्शाने वाली तिब्बती और भारतीय कला प्रदर्शनों का मिश्रण था।

सांसद श्री विजय कुमार दुबे ने कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की सराहना की और उनके हर प्रयास के लिए शुभकामनाएं दीं। तिब्बती कलाकारों का विशेष रुप से उल्लेख करते हुए श्री दुबे ने कहा कि यह उत्कृष्ट है कि तिब्बतियों ने अपनी मातृभूमि से बाहर होने के बावजूद अपनी संस्कृति को जीवित रखा है। इसे उन्होंने प्रशंसनीय बताया और साथ ही कहा कि एक समुदाय के लिए ऐसा करना महत्वपूर्ण है।

विधायक श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी ने कहा कि कुशीनगर में इस तरह के और भी कार्यक्रम होने चाहिए जिससे तिब्बती संस्कृति को चारों ओर फैलाया जा सके और आम लोगों में तिब्बत के प्रति जागरुकता पैदा की जा सके।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन तिब्बती और भारतीय राष्ट्रगान के साथ हुआ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेने के लिए विशिष्ट अतिथियों के अलावा, तिब्बत समर्थक समूह के सदस्य, बुद्ध पीजी कॉलेज, कुशीनगर के कर्मचारी और छात्र और आम जनतावहां मौजूद थी।

कार्यक्रम का संचालन श्री राज कुमार मधेसी और सुश्री वंदना ने किया।

• तिब्बती स्वतंत्रता सेनानी ने १२७ दिवसीय हिमालय यात्रा पूरी की

हिंदुस्तान टाइम्स, २४ दिसंबर २०२१

तिब्बती स्वतंत्रता सेनानी और लेखक तेनज़िन त्सुंडु

तिब्बती स्वतंत्रता सेनानी और लेखक तेनज़िन त्सुंडु ने कहा कि हिमालय क्षेत्र में १२७ दिनों में लगभग २०,००० किलोमीटर की दूरी तय करने के दौरान उन्होंने महसूस किया कि सीमावर्ती क्षेत्रों के आम लोगों को चीन की विस्तारवादी नीतियों के बारे में कोई जानकारी नहीं है या बहुत कम जानकारी है।

तिब्बती स्वतंत्रता कार्यकर्ता और लेखक तेनज़िन त्सुंडु ने तिब्बत में चीनी कब्जे के ७०वर्षों के बारे में जागरुकता बढ़ाने और भारत के लिए सुरक्षा खतरे के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए भारत के एक केंद्र शासित प्रदेश और चार हिमालयी राज्यों की यात्रा करते हुए अपनी महायात्रा पूरी की है।

त्सुंडु १४ अगस्त को 'हिमालय की सैर' अभियान के लिए धर्मशाला से निकले थे। उन्होंने लेह से अपनी यात्रा शुरु की, स्थानीय परिवहन का उपयोग करके हिमाचल, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल की यात्रा की और बुधवार को धर्मशाला लौटने से पहले वह दूरदराज के ज्यादातर गांवों, खानाबदोश क्षेत्रों और सीमावर्ती इलाकों से गुजरे।

४६ वर्षीय कार्यकर्ता ने कहा कि इस यात्रा के दौरान १२७ दिनों में लगभग २०,००० किलोमीटर की दूरी तय करते हुए उन्होंने महसूस किया कि सीमावर्ती क्षेत्रों के आम लोगों को चीन की विस्तारवादी नीतियों और सीमाओं के पार इसकी वर्तमान गतिविधियों के बारे में कोई जानकारी नहीं है या है भी तो बहुत कम। उन्होंने कहा, 'वे २०२० में भारतीय सेना और चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के बीच गलवान घाटी में संघर्ष से स्तब्ध रह गए थे, जिसमें २० भारतीय सैनिक मारे गए थे।'

स्वतंत्रता सेनानी अपने साथ एक प्रोजेक्टर, साउंड बॉक्स और बेडशीट स्क्रीन लेकर

चल रहे थे, जिसका इस्तेमाल वह फिल्म 'एस्केप ऑफ द दलाई लामा' की लगभग १०० बार स्क्रीनिंग के लिए करते रहे। उन्होंने कहा कि 'यह फिल्म तिब्बत पर चीनी कब्जे और हिमालय की सीमाओं पर चीनी सैन्य दबाव का पूरा विवरण प्रस्तुत करती है।'

• तिब्बत मुक्ति साधना असम में जन आंदोलन का रूप धारण कर चुके है।

tibet.net, ३० दिसंबर, २०२१

असम तिब्बती समर्थक समूह

असम। असम स्थित एक तिब्बत समर्थक समूह 'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' ने २६ दिसंबर २०२१ को भैरबकुंडा, असम में तिब्बत के समर्थन में एक जन आंदोलन का आयोजन किया। तिब्बत को स्वतंत्रता और न्याय देने के लिए शांतिपूर्ण तिब्बती मुक्ति साधना के समर्थन में असम के उदलगुरी के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के स्थान भैरबकुंड के युवा और आम लोगों ने 'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' के नेतृत्व में इस जन आंदोलन में भाग लिया। आंदोलन में शामिल लोग 'हम अपने पड़ोसी देश, तिब्बत पर कम्युनिस्ट चीन द्वारा जबरदस्ती कब्जे का विरोध करते हैं' और 'हम कम्युनिस्ट चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र सभ्यता की पारिस्थितिकीय विनाश का विरोध करते हैं' जैसे नारे लगा रहे थे।

अभियान के दौरान, बोडो समुदाय के स्थानीय युवाओं ने कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक (असम और मेघालय) श्री सौम्यदीप दत्ता के साथ एक संवाद सत्र में भाग लिया, जो तिब्बती मुक्ति साधना के बारे में युवाओं और स्थानीय लोगों के बीच जागरुकता पैदा करने के साथ इसमें उनकी भागीदारी का महत्व बताने के लिए आयोजित किया गया था।

इस तरह के अभियानों के साथ 'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' तिब्बती मुक्ति साधना को भारत के ग्रामीणों, जातीय समुदायों और जमीनी स्तर पर ला रहा है, जिससे यह असम में एक जन आंदोलन बन गया है।

भैरबकुंड एक त्रिकोण पर स्थित है जहां असम, भूटान और अरुणाचल प्रदेश की सीमाएं लगती हैं। भूटान से जमपानी नदी और भैरबी नदी यहां ब्रह्मपुत्र नद की एक प्रमुख सहायक धनसिरी नदी में विलीन हो जाती है। पर्यटकों की रुचि का स्थान होने के अलावा भैरबकुंड हिंदुओं और बौद्धों दोनों के लिए धार्मिक महत्व का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह जगह अपने खूबसूरत प्राकृतिक वातावरण से पूरे असम के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

• असम: व्याख्यान में ब्रह्मपुत्र पर चीन के बांधों और तिब्बती संस्कृति के बारे में प्रकाश डाला गया

nenow.in, अविक चक्रवर्ती, २१ दिसंबर २०२१

श्री सौम्यदीप दत्ता

सोमवार को डीएचएस कनोई कॉलेज के श्रीमंत शंकरदेव सभाकक्ष में असम स्थित 'फ्री तिब्बत-ए वॉयस फ्रॉम असम' के सहयोग से मानव विज्ञान विभाग, डीएचएस कनोई कॉलेज द्वारा सोमवार को 'ब्रह्मपुत्र घाटी और तिब्बती संस्कृति' पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।
इस विषय पर बोलते हुए कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के पूर्वोत्तर क्षेत्र (मेघालय और असम) के क्षेत्रीय संयोजक सौम्यदीप दत्ता ने कहा कि ब्रह्मपुत्र घाटी सभ्यता और तिब्बती सभ्यता में समानताएं हैं। उन्होंने कहा कि दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

दत्ता ने कहा, 'असम के अधिकांश स्वदेशी लोग तिब्बत से आए हुए हैं। अगर भारत हमारी मातृभूमि है तो तिब्बत हमारी जन्मभूमि है। हम उसी सभ्यता से आए हैं जो युगों-युगों तक फली-फूली।'

दत्ता ने कहा, 'तिब्बत एक स्वतंत्र देश था लेकिन १९५९ में चीन ने अवैध रुप से तिब्बत पर कब्जा कर लिया। तिब्बत पर कब्जा करने के बाद चीनी कम्युनिस्ट सरकार ने तिब्बती लोगों पर अत्याचार करना शुरु कर दिया। कई बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया गया। हाल के दिनों में चीनी सरकार द्वारा कई भिक्षुओं को मार दिया गया है।'

दत्ता ने आगे कहा, लोगों में भारत-चीन सीमा को लेकर भ्रांतियां है, लेकिन वास्तव में भारत और चीन के बीच कोई सीमा नहीं है। असल में भारत तिब्बत के साथ सीमा साझा करता है, जो भारत और चीन के बीच एक बफर स्टेट है।

'चीन ने तिब्बत पर अवैध रुप से कब्जा कर लिया और अब वह भारत पर दबाव बनाने के लिए बांध बना रहा है। चीन भारत के लिए खतरा है और असम के निचले इलाकों में बांध बनाने और दबाव बनाने की उनकी युद्ध रणनीति है।'

दत्ता ने कहा कि चीनी सत्ता के अवैध कब्जे के बाद से तिब्बत मुक्ति का आंदोलन चल रहा है। चीनी सरकार ने चीनी कब्जे से आजादी की मांग करने पर कई तिब्बतियों को मार डाला है।

'कई तिब्बती प्रदर्शनकारियों ने चीनी सरकार से बचाव के लिए आत्मदाह कर लिया।'

उन्होंने कहा, 'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' जनता के बीच तिब्बत मुद्दे पर जागरुकता पैदा कर रही है।'

'मैंने छात्रों से तिब्बत पर अध्ययन करने का आग्रह किया। तिब्बत मुक्ति के आंदोलन पर जागरुकता पैदा करने में छात्रों की बड़ी भूमिका है।'

दत्ता के अलावा, फ्री तिब्बत - ए वॉयस फ्रॉम असम के डिब्रूगढ़ जिला समन्वयक अविक चक्रवर्ती, डीएचएस कनोई कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ.शशि कांत सैकिया, नृविज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ.मोरोमी तालुकदार, डॉ.अनूप ज्योति भराली, डॉ.नितुमणि सैकिया, डॉ.भास्कर दास और डॉ. सुनंदा साहू उपस्थित थे।

कार्यक्रम में भौतिकी विभाग से डॉ.ज्योति फुकन और डॉ.आदित्य दहल, भूगोल विभाग की डॉ. मालती चालिहा, समाजशास्त्र विभाग की पूजा चगकाकोटी, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ.पल्लबी गोगोई और डिब्रूगढ़ की यातायात निरीक्षक मृगांक सैकिया भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

• तिब्बती सांसदों ने अपने स्पीकर के नेतृत्व में हिमाचल विधानसभा का संचालन देखा

tibet.net, १५ दिसंबर, २०२१

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश के वन मंत्री श्री राकेश पठानिया के निमंत्रण पर तिब्बती सांसदों ने अपने स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल के नेतृत्व में धर्मशाला के पास तपोवन में १० से १५ दिसंबर तक आयोजित हिमाचल प्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र की कार्यवाही को कल १४ दिसंबर को देखा।

निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल और हिमाचल प्रदेश विधानसभ के अध्यक्ष श्री विपिन सिंह परमार

निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर ने हिमाचल प्रदेश विधानसभ के अध्यक्ष श्री विपिन सिंह परमार, विपक्ष के नेता श्री मुकेश अग्निहोत्री, वन मंत्री श्री राकेश पठानिया, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री श्रीमती सरवीन चौधरी और एमपीपी एवं बिजली मंत्री श्री सुखराम से मुलाकात की।

विधान सभा में पहली बार आए तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल और संसद सदस्यों- खेंपो काडा नेगडुप सोनम, गेशे न्गाबा गंगरी, फुरपा दोरजी ग्यालधोंग, दावा त्सेरिंग, दावा फुंकी, धोंडुप ताशी, लोबसंग ग्यात्सो सिथर, पेमा त्सो और लोबसंग थुप्टेन का हिमाचल प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष श्री विपिन सिंह परमार ने सदन में अलग- अलग परिचय देते हुए सम्मानित किया और गर्मजोशी से स्वागत किया।

पिछले छह दशकों से परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का मुख्यालय होने के कारण तिब्बती स्पीकर ने भारत, इसके लोगों और विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में हजारों वर्षों के भारत-तिब्बत के सौहार्दपूर्ण संबंधों पर प्रकाश डाला।

अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने श्री विपिन सिंह परमार, श्री मुकेश अग्निहोत्री और श्री राकेश पठानिया को स्मृति चिन्ह और श्रीमती सरवीन चौधरी और श्री सुख राम को औपचारिक खटक भेंट किए। बदले में स्पीकर के नेतृत्व वाले तिब्बती सांसदों को हिमाचली टोपी और शॉल से सम्मानित किया गया। इसके बाद तिब्बती सांसदों को हिमाचल प्रदेश विधानसभा में दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया गया।

तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने भी हिमाचल विधानसभा के अध्यक्ष श्री विपिन सिंह परमार को निकट भविष्य में निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा करने का निमंत्रण दिया।

• तिब्बती संसदीय समर्थन अभियान सातवें दिन भी जारी

tibet.net, २१ दिसंबर, २०२१

नई दिल्ली। तिब्बती संसदीय तिब्बत समर्थन अभियान सातवें दिन यानि २० दिसंबर को भी जारी रहा और अभियान में शामिल तिब्बती गणमान्य हस्तियों ने तिब्बत के मुद्दे पर भारतीय मंत्रियों, सांसदों और विदेशी अधिकारियों के साथ बैठक, बातचीत और अपने पक्ष को मजबूती से रखा।

भारतीय संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान १७वीं तिब्बती संसद के सदस्यों- सेर्टा त्सुल्ट्रिम, गेशे ल्हारम्पा गोवो लोबसंग फेंडे, लग्यारी नामग्याल डोलकर, गेशे एटोंग रिनचेन ग्यालत्सेन और चोएडक ग्यात्सो के प्रतिनिधिमंडल ने भारत के कौशल विकास,उद्यमिता और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री श्री राजीव चंद्रशेखर, हिमाचल प्रदेश से लोकसभा सदस्य श्री सुरेश कुमार कश्यप, पश्चिम बंगाल से लोकसभा सदस्य श्री राजू बिस्ता, पंजाब से लोकसभा सदस्य श्री मनीष तिवारी, और ओडिशा से लोकसभा सदस्य श्री सब्तागिरी उल्का से मुलाकात की।

बाद में शाम को तिब्बती प्रतिनिधियों ने दिल्ली में अमेरिकी दूतावास का दौरा किया और राजनीतिक मामलों के सलाहकार श्री ग्राहम डी.मेयर और अमेरिकी दूतावास के सचिव श्री जॉन एन. विनस्टेड से मुलाकात की। उन्होंने तिब्बत के भीतर वर्तमान गंभीर स्थिति पर चर्चा की और तिब्बत के मुद्दे के लिए अमेरिका के निरंतर समर्थन बनाए रखने का आग्रह किया।

तिब्बत एडवोकेसी अभियान के दौरान प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने भारत से तिब्बत के लिए सर्वदीलय भारतीय संसदीय मंच के पुनरुद्धार और निम्नलिखित पांच बिंदुओं पर समर्थन मांगा।

१. तिब्बती पहचान और उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के अस्तित्व के सवाल पर भारत अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाए।
२. तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन, धार्मिक दमन पर चिंता प्रदर्शित करने में विश्व के नेताओं के साथ शामिल हो।
३. परम पावन और साम्यवादी चीन के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की शीघ्र बहाली का समर्थन करे।
४. वैश्विक जलवायु परिवर्तन का तिब्बती पठार पर पड़नेवाले प्रभाव को समझने के लिए एक वैज्ञानिक अनुसंधान अध्ययन शुरू करने के लिए संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसीसी) से आग्रह करने के लिए विश्व के नेताओं के साथ शामिल हो।
5. तिब्बत में मानवीय पीड़ा के साथ एकजुटता दिखाने के लिए शीतकालीन ओलंपिक, २०२२ का बहिष्कार करे।

• चीन पर यूरोपीय संघ-अमेरिका वार्ता की दूसरी उच्च स्तरीय बैठक में तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर प्रमुखता से बात हुई

tibet.net, ०३ दिसंबर २०२१

ब्रसेल्स, ०३ दिसंबर २०२१। चीन पर दूसरी यूरोपीय संघ-अमेरिका उच्च स्तरीय वार्ता ०२ दिसंबर को वाशिंगटन में हुई। वार्ता में अमेरिका का प्रतिनिधित्व विदेश उपमंत्री वेंडी आर. शेरमेन ने किया और यूरोपीय संघ का प्रतिनिधित्व यूरोपीय एक्सटर्नल एक्शन सर्विस (ईईएएस) के महासचिव स्टेफानो सैनिनो ने किया।

उन्होंने विदेश नीति के आपसी सरोकार के मुद्दों की विस्तृत श्रृंखला पर चर्चा की। उच्च-स्तरीय बैठक के बाद एक संयुक्त घोषणा में यूरोपीय संघ और अमेरिका ने अन्य बातों के अलावा चीन में चल रहे मानवाधिकारों के हनन और उल्लंघन और तिब्बत सहित अन्य क्षेत्रों में सुनियोजित ढंग से चल रहे चीनी दमन पर प्रकाश डाला। दोनों पक्षों ने चीन की उन कार्रवाइयों की बढ़ती सूची पर भी चर्चा की जो साझा चिंता का विषय हैं, जिनमें वे कार्रवाइयां भी शामिल हैं जो अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करती हैं और जो अमेरिका और यूरोपीय संघ के साझा मूल्यों और हितों के खिलाफ हैं।

अमेरिकी उप विदेश मंत्री शेरमेन और महासचिव सन्नीनो ने २०२२ के मध्य में होने वाली अगली उच्च स्तरीय बैठक के साथ आयोजित करने के साथ ही वरिष्ठ अधिकारी और विशेषज्ञ स्तरों पर इस वार्ता को जारी रखने का निर्णय लिया।

स्विस पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत

गौरतलब है कि चीन पर पहली उच्च स्तरीय वार्ता इसी साल २६ मई को ब्रसेल्स में हुई थी।

• 'स्विस पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत' ने शीतकालीन सत्र के लिए बैठक की

tibet.net, ०८ दिसंबर, २०२१

'स्विस पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत' ने ०७ दिसंबर को स्विस संसद के चल रहे शीतकालीन सत्र से इतर तिब्बत के लिए कार्ययोजनाओं पर चर्चा करने के लिए बैठक की। संसद का शीतकालीन सत्र २७ नवंबर से शुरू हुआ और १७ दिसंबर २०२१ तक चलेगा।

कर्मा तेंजिन

'स्विस पार्लियामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत' की ओर से समूह के सह-अध्यक्ष माननीय निकोलस वाल्डर और माननीय फैबियन मोलिना और समूह के सदस्य माननीय माया ग्राफ और माननीय कथरीना प्रीलीज़-ह्यूबर ने बैठक में भाग लिया।

जिनेवा में तिब्बत ब्यूरो के प्रतिनिधि छिमे रिग्जेन और कलडेन त्सोमो, स्विट्जरलैंड के तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष और लिकटेंस्टीन कर्मा चोएक्यी और स्विस-तिब्बती मैत्री संघ के प्रतिनिधियों- ल्हावांग नोगोरकांगसर और उवे मेया ने बैठक में हिस्सा लिया।

बैठक में तिब्बत की वर्तमान स्थिति, निर्वासन में आना चाहने वाले तिब्बती लोगों की स्थिति और तिब्बत के लिए भविष्य की कार्य योजनाओं सहित कई मुद्दों पर चर्चा की गई।

बैठक केबाद, सांसदों ने स्विस-आधारित नागरिक समाज समूहों के अभियान में हिस्सा लिया और सर्वसम्मति से बीजिंग में आयोजित होने वाले शीतकालीन ओलंपिक २०२२ के राजनयिक बहिष्कार के लिए स्विस सरकार का आह्वान किया।

बीजिंग ने तिब्बती भाषा के खिलाफ अभियान चला रखा है

tibetpolicy.net, ०१ दिसंबर, २०२१

चीनी सरकार युवा पीढ़ी में तिब्बती पहचान की भावना को मिटा रही है।

चीन सरकार द्वारा पिछले कुछ वर्षों में जारी नोटिसों और बने नए कानूनों की श्रृंखला ने ऐसा वातावरण तैयार किया है, जहां तिब्बती बच्चों को तिब्बती भाषा सीखने से रोका जाता है। उदाहरण के लिए ११ मार्च को नेशनल पीपुल्स कांग्रेस (एनपीसी) में पारित चीनी सरकार की १४वीं पंचवर्षीय योजना के अनुच्छेद- XLIII (५३) में कहा गया है-

डॉ तेंजिन त्सुल्ट्रीम

'हम समावेशी पूर्वस्कूली शिक्षा, विशेष शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के लिए आश्वासन तंत्र में सुधार करेंगे और पूर्वस्कूली शिक्षा में सकल नामांकन दर को ९०% से अधिक तक ले जाएंगे। हम नस्लीय अल्पसंख्यक क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता और स्तर बढ़ाएंगे और राष्ट्रीय स्तर की एक भाषा और एक लिपि को लोकप्रिय बनाने के प्रयासों को तेज करेंगे।'

उपरोक्त योजना इंगित करती है कि चीनी सरकार 'राष्ट्रीय सामान्य भाषा' के नाम पर मंदारिन और मानक लिपि के नाम पर चीनी लिपि को तेज और लोकप्रिय बनाना चाहती है। इसके माध्यम से पार्टी-सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह गहन मतारोपण और प्रचार के माध्यम से युवा पीढ़ियों के बीच तिब्बती पहचान की भावना को मिटाकर सामाजिक अस्थिरता के स्रोत को खत्म करने का इरादा रखती है।

तिब्बती आंदोलन में तिब्बती भाषा सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है जो युवाओं में तिब्बती पहचान की भावना को बनाए रखती है। इसलिए चीनी सरकार ने तिब्बती भाषा पर हमले को तेज कर दिया है।

रेडियो फ्री एशिया (आरएफए) के अनुसार, पिछले महीने किंघई प्रांत के सभी जिलों और शहरों को एक नोटिस जारी किया गया था। इस क्षेत्र को तिब्बती लोग अपनी ऐतिहासिक भूमि के सोंगोन क्षेत्र के रूप में जानते हैं। नोटिस में व्यक्तियों और संगठनों को सर्दियों की छुट्टियों के दौरान तिब्बती भाषा पढ़ाने के लिए किसी भी अनौपचारिक कक्षाएं आयोजित करने से मना किया गया है।

बात करने वाले आरएफए सूत्र ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि नोटिस मोटे तौर पर कहता है, 'किसी भी व्यक्ति या संगठन को स्कूलों के बंद होने पर सर्दियों की छुट्टियों के दौरान तिब्बती भाषा सिखाने के लिए अनौपचारिक कक्षाएं या कार्यशाला आयोजित करने की अनुमति नहीं है।'

कुछ महीने पहले, सोंगोन में चीनी अधिकारियों ने कुछ निजी स्कूलों को बंद कर दिया था। गोलोग तिब्बती स्वायत्त प्रान्त में डारलाग काउंटी को ०८ जुलाई को बिना किसी स्पष्टीकरण के बंद कर दिया गया था। चीनी सरकार ने विभिन्न नोटिस और फरमानों में पूरे क्षेत्र में तिब्बती संस्कृति को बढ़ावा देने और तिब्बती भाषा में शिक्षा देने वाले स्कूलों पर दबाव बनाना शुरू कर दिया है।

इसी तरह अक्तूबर में सिचुआन प्रांत के कर्ज़े में ड्रैगो मठ द्वारा प्रशासित एक स्कूल गाडेन राबटेन नामग्यालिंग को ध्वस्त करने के लिए केवल तीन दिन का नोटिस दिया गया था। नोटिस में कहा गया था कि यदि स्कूल प्रशासन खुद स्कूल ध्वस्त नहीं करता है तो स्थानीय चीनी अधिकारी ऐसा करेंगे और निर्माण सामग्री को भी जब्त कर लेंगे।

संभवत: मोबाइल फोन से शूट करके रेडियो फ्री एशिया के यू-ट्यूब चैनल पर अपलोड किए गए ५२ सेकेंड के वीडियो में दर्जनों दानवाकार क्रेन और ट्रक स्थानीय चीनी नेताओं की मौजूदगी में स्कूल को तोड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। अधिकारियों ने मठ पर भूमि उपयोग मामले में राज्य के कानूनों के उल्लंघन का आरोप लगाया है।

यों तो पहले से ही अधिकांश आधिकारिक दस्तावेज, नोटिस, पत्राचार और प्रमाणन पत्र चीनी भाषा में लिखे जा रहे हैं। लेकिन युवा अपनी मातृभाषा के बारे में चिंतित रहते हैं और यह आश्वासन देना चाहते हैं कि जो बातें अन्य किसी भी भाषा में कही जा सकती हैं उसे तिब्बती भाषा में भी पूरी सक्षमता के साथ व्यक्त किया जा सकता है।

चीन सरकार की शत्रुतापूर्ण शिक्षा और भाषा नीतियों के कारण २०१० में लगभग ५००० से ७००० तिब्बती छात्रों ने टोंग्रेन, सोंगोन में शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन किया। यदि चीनी सरकार कठोर नीतियों को लागू करना जारी रखती है तो यह तिब्बती भाषा को और अधिक हाशिए पर ले जाएगी और तिब्बती लोगों में आक्रोश पैदा कर सकती है।

पिछले साल आंतरिक मंगोलिया में माता-पिता और छात्रों ने नई द्विभाषी शिक्षा नीति का बहिष्कार किया था, जिसमें सभी प्राथमिक और मध्य विद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों में चीनी भाषा का उपयोग अनिवार्य बना दिया गया है। इस नीति से वर्तमान मंगोलियाई पाठ्यपुस्तकों की जगह ये चीनी पाठ्यपुस्तक ले लेंगे।

शी जिनपिंग के चीनी राष्ट्रपति बनने के बाद से तिब्बत, पूर्वी तुर्किस्तान और आंतरिक मंगोलिया में कार्रवाई तेज हो गई है। अब चीन की कम्युनिस्ट पार्टी संविधान से ही नस्लीय भाषा के अधिकारों को बाहर करने की राह पर है।

जापान में शिज़ुओका विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक नृतत्वशास्त्री और प्रोफेसर यांग हैयिंग के अनुसार, सीपीसी अभी स्थानीय नियमों में संशोधन कर रहा है और अगला कदम संविधान में संशोधन करने का होगा। चीनी सरकार का मकसद नस्लीय समुदायों द्वारा उपयोग की जा रही उनकी अपनी भाषा से छुटकारा पाना है। उन्हें आगे संदेह है कि जल्द ही, 'सभी स्वायत्त क्षेत्रों को भी प्रांतों में बदल दिया जाएगा।'

पिछले महीने भाषा सीखने वाले ऐप टॉकमेट और ऑनलाइन वीडियो स्ट्रीमिंग साइट बिलिबिली ने सरकारी नीति के परिणामस्वरूप तिब्बती और उग्यूर भाषाओं को अपने प्लेटफॉर्म से हटा दिया।

तिब्बत के अंदर चीनी अधिकारियों द्वारा थोपी गई भेदभावपूर्ण शिक्षा और भाषा नीतियां दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं, जिससे आगे चलकर तिब्बती संस्कृति का चीनीकरण हो रहा है। तिब्बत में हाल के घटनाक्रमों को देखते हुए इस लेखक को अनुमान है कि आने वाले दिनों में जल्द ही सोशल मीडिया पर तिब्बती भाषा के ऑनलाइन शिक्षण पर और कार्रवाई होगी।

*कर्मा तेनज़िन तिब्बत नीति संस्थान में रिसर्च फेलो हैं। यहां व्यक्त किए गए विचार जरूरी नहीं कि तिब्बत नीति संस्थान के विचारों को प्रतिबिंबित करें। यह लेख मूल रूप से १७ नवंबर २०२१ को एशिया टाइम्स में प्रकाशित हुआ था।

• भारत-चीन सीमा विवाद से सिर्फ पेंटागन ही नहीं, ताइवान और तिब्बत भी चिंतित

tibetpolicy.net, ६ दिसंबर, २०२१

दो अलग-अलग रिपोर्टों में चीन की विस्तारवादी नीति और सीमा पर उसके बढ़ते कारनामे खुलकर सामने आए हैं।

पिछले कुछ वर्षों से एशिया में सुरक्षा का माहौल अविश्वास और संदेह के बादलों से ढका हुआ है। डोकलाम गतिरोध से लेकर गलवान घाटी संघर्ष तक चीन ने अक्सर अपने वादों और भारत के भरोसे को तोड़ा है।

२०२१ की पेंटागन रिपोर्ट भी भारत के प्रति चीन की दोहरी नीति की पुष्टि करती है। रिपोर्ट में कहा गया है, 'सीमा पर तनाव को कम करने के लिए चल रहे राजनयिक और सैन्य संवाद के बावजूद पीआरसी ने एलएसी पर अपने दावों को पुष्ट करने के लिए अतिक्रमणकारी और सामरिक कार्रवाई जारी रखी हुई है।'

भविष्य के दावों और नियंत्रण के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) की यह एक लंबी क्षेत्रीय रणनीति रही है। उदाहरण के लिए १९९५ में फिलीपींस के साथ कई राजनयिक जुड़ावों के बावजूद चीन ने मिसचीफ रीफ पर अपनी उपस्थिति को बढ़ाना जारी रखा।

बुनियादी ढांचा और प्रतीकात्मक रूप से लोगों का एकीकरण

रिपोर्ट में आगे कहा गया है, '२०२० में किसी समय पीआरसी ने तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र और एलएसी के पूर्वी क्षेत्र में स्थित भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य के बीच विवादित क्षेत्र में १०० घरों का एक गांव बना दिया।'

रॉन ई. हसनर द्वारा लिखे गए एक व्यावहारिक आलेख 'द पाथ टू इंट्रैक्टेबिलिटी: टाइम एंड द एंट्रेंचमेंट ऑफ टेरिटोरियल डिस्प्यूट्स (अखंडता का मार्ग: क्षेत्रीय विवादों का समय और खाई)' में लेखक का तर्क है कि भौतिक लिंक (उदाहरण के लिए सड़कों) और प्रतीकात्मक लिंक (जैसे मंदिर और चर्च) का निर्माण) विवादित क्षेत्र में कब्जे वाले राज्य के साथ विवादित क्षेत्र को और बढ़ाएगा।

उपरोक्त सभी गतिविधियों ने विवादित क्षेत्र और कब्जे वाले राज्य के बीच संबंधों को और मजबूत किया। इसलिए भविष्य में समझौता करना और अधिक कठिन हो जाएगा, क्योंकि विवादित क्षेत्र कब्जे वाले राज्य के साथ प्रतीकात्मक रूप से और भौतिक रूप से जुड़ा हुआ है।

दूसरे शब्दों में बुनियादी ढांचे का निर्माण हमेशा राजनीतिक महत्व का होता है। सीमा प्रशासन के संदर्भ में यह संप्रभु स्थान के मार्कर और एक जैव-राजनीतिक हस्तक्षेप- दोनों के संदर्भ में यह राज्य की क्षेत्रीयता को लागू करने का प्रतीक है। संक्षेप में कहें तो विवादित क्षेत्र के अंदर कथित तौर पर १०० घरों वाले एक बड़े गांव के निर्माण से चीन ने पहले ही विवाद की खाई को बढ़ाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

चीन पर ताइवान की राष्ट्रीय रक्षा रिपोर्ट

हाल ही में ताइवान के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय ने भी अपनी वार्षिक 'आरओसी राष्ट्रीय रक्षा रिपोर्ट- २०२१' जारी की। पहली बार चीन से बढ़ते सैन्य खतरों के बीच ताइवान और अन्य देशों के बीच संचार को बढ़ावा देने के लिए चीनी और अंग्रेजी भाषा में एक साथ रिपोर्ट जारी की गई थी।

सुरक्षा वातावरण पर पहला अध्याय कहता है, 'अमेरिका और चीन के बीच रणनीतिक प्रतिस्पर्धा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भू-राजनीतिक और सुरक्षा स्थितियों को प्रभावित कर रही है। एक तरफ अमेरिका क्षेत्रीय सहयोगियों और भागीदारों के साथ सहयोग पर जोर दे रहा है। इसके अलावा, बढ़ते गैर-पारंपरिक खतरों के साथ-साथ अधिक व्यापक अंतर-क्षेत्रीय और समग्र प्रभावों के साथ क्षेत्र के सभी देशों को हाथ मिलाने और प्रतिक्रिया करने की आवश्यकता है।'

यह अमेरिका और भारत के बीच मजबूत होते संबंधों और एशियाई देशों को चीन की बढ़ती आक्रामकता के खिलाफ हाथ मिलाने की आवश्यकता का संकेत देता है। बीजिंग का इन क्षेत्रों के देशों के साथ दक्षिण चीन सागर, पूर्वी चीन सागर और भारत-तिब्बत सीमा जैसे कई गंभीर विवाद हैं।

भारत-चीन संबंधों को लेकर रिपोर्ट बहुत उदासीन है, 'उनके बीच क्षेत्रीय विवाद जल्द हल होने की संभावना नहीं है।' पहला अध्याय अपनी व्यापक राष्ट्रीय शक्ति के माध्यम से चीन के जनवादी गणराज्य के भू-राजनीतिक प्रभावों के विस्तार और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को बदलने के लिए आर्थिक दबाव और ग्रे-ज़ोन रणनीति का भी उपयोग करता है।

संक्षेप में अमेरिका और ताइवान दोनों एक स्थिर और खुली अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए चीन द्वारा पेश की जा रही बढ़ती चुनौतियों को स्वीकार करते हैं।

तिब्बत क्यों मायने रखता है?

तिब्बत में बुनियादी ढांचे का विकास चीन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक रहा है। तिब्बत नीति संस्थान, धर्मशाला द्वारा प्रकाशित 'तिब्बत २०२०: एक वर्ष की समीक्षा' में कहा गया है-

'चीनी की १४वीं पंचवर्षीय योजना तिब्बत और पूर्वी तुर्केस्तान (झिंझियांग) के बीच राजमार्ग लिंक के अलावा रेलवे लाइन संपर्कों का विस्तार करके चीन के हितों को दर्शाती है। चीन की वर्तमान पंचवर्षीय योजना में यह उल्लेख किया गया है कि चीन 'झिंझियांग से बाहर और तिब्बत में रणनीतिक रीढ़ की हड्डी माने जाने वाले गलियारों के निर्माण को तेज करेगा'। इसमें जी-२१९ (झिंजियांग-तिब्बत), जी-३१८ सिचुआन-तिब्बत राजमार्ग और जी-३३१ (दादोंग से अल्ताय) राष्ट्रीय राजमार्गों का उन्नयन और विस्तार शामिल है। दिलचस्प बात यह है कि ये सभी रणनीतिक राजमार्ग भारत के साथ तिब्बत की सीमा पर एक-दूसरे के समानांतर चलते हैं। अतीत में भी, तिब्बत पर आक्रमण और कब्जा करने के बाद सीसीपी ने तिब्बत के सभी सीमावर्ती क्षेत्रों को जोड़ने के लिए भारत से लगती तिब्बत की सीमाओं सहित अपने सड़क नेटवर्क का निर्माण और सुदृढ़ीकरण शुरू किया। इस तरह १९५७ में बनकर तैयार हुआ पूर्वी तुर्केस्तान (चीनी: झिंझियांग)-तिब्बत राजमार्ग अक्साई चिन के भारतीय क्षेत्र से होकर गुजरता है।

हाल ही में टाइम्स नाउ समिट में भारत के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत ने कहा, 'चीन भारत के सामने सबसे बड़ा सुरक्षा खतरा है।' उन्होंने आगे कहा कि 'विश्वास की कमी' और बढ़ता 'संदेह' दो परमाणु-संपन्न पड़ोसियों के बीच सीमा विवादों को हल करने के रास्ते में आ रहा है। इसलिए भविष्य में तिब्बत के अंदर जो कुछ भी होता है, वह भारतीय सुरक्षा वातावरण और एशिया के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकता है।

**डॉ. तेनज़िन त्सुल्ट्रिम तिब्बत नीति संस्थान में विजिटिंग फेलो हैं। जरूरी नहीं कि यहां व्यक्त किए गए विचार तिब्बत नीति संस्थान के विचारों को प्रतिबिंबित करते हों। यह लेख मूल रूप से क्विंट में ०१ दिसंबर २०२१ को प्रकाशित हुआ था।*

*****

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Jigmey Tsultrim
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

जिगमे त्सुलट्रिम
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

December, 2021, Years: 42 Issue: 12 Regd No. : RNI 34636-79

ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर तिब्बत के संसदीय प्रतिनिधिमंडल

तिब्बत मुक्ति आंदोलन की जन जागरण साइकिल यात्रा मे श्री सन्देश मेश्राम